RNI No.: UPHIN/2010/32733

ग्राम भारती

कृषि, ग्रामीण विकास, सहकारिता और पंचायती राज का पाक्षिक

लखनऊ, वर्ष 12, अंक 11, 16 सितम्बर, 2021, पृष्ठ 44 मूल्य ₹ 25

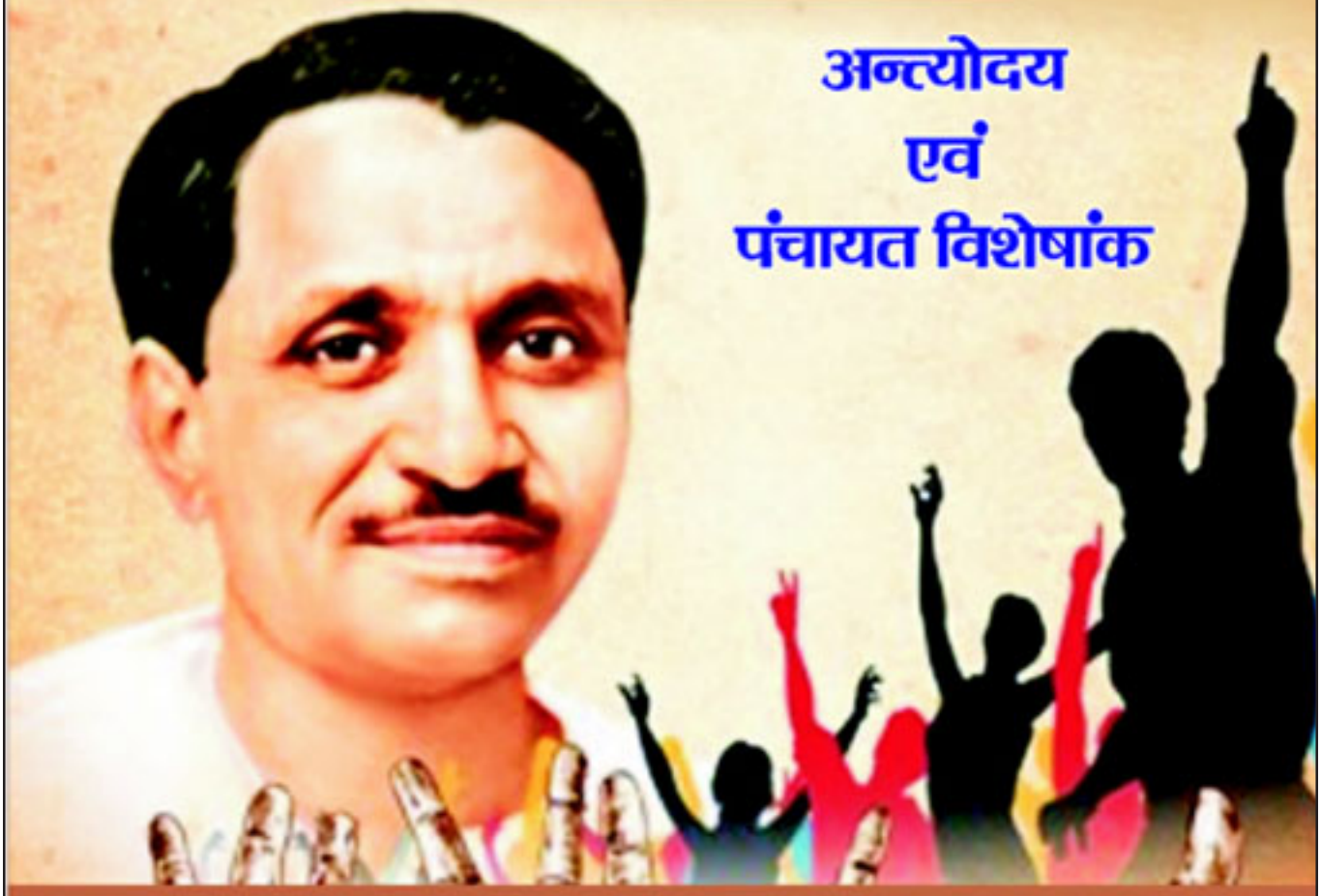

अन्त्योदय एवं पंचायत विशेषांक

अन्त्योदय से राष्ट्रोदय

विमोचन समारोह ग्राम भारती पंचायत विशेषांक

5 सितम्बर, 2021

विनोबा सेवा आश्रम, ग्राम–बनतारा, शाहजहाँपुर

ग्राम भारती

पाक्षिक

RNI NO.: UPHIN/2010/32733

(उ.प्र.समाचार सेवा का सहयोगी प्रकाशन)

वर्ष 12, अंक 11

अन्त्योदय एवं पंचायत विशेषांक

संपादक

सर्वेश कुमार सिंह

पृष्ठ 44, मूल्य 25 रुपये

संपादकीय संपर्क

3/11, आफीसर्स कालोनी, कैसरबाग,
लखनऊ-226001

ग्राम भारती पाक्षिक के लिए स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक सर्वेश कुमार सिंह द्वारा माडर्न प्रिंटर्स, 10 घसियारी मण्डी, कैसरबाग, लखनऊ-226001 से मुद्रित एवं 103-117 प्रथम तल, प्रिंस काम्पलेक्स, हजरतगंज, लखनऊ-226001 से प्रकाशित।

फोनः 9453272129, WhatsAPP: 9140624166

ई-मेलः grambhartilko@gmail.com

अपनी बात	02
सम्पादकीय	03
सिर्फ नारा न रहे कृषि और	05
कृषि उद्यान में उत्पादन बढ़े	09
सीतापुर पंचायत चुनाव में भाजपा	10
खेती और स्वावलंबन	13
जीवन वृत्तः पं. दीनदयाल उपाध्याय	15
उत्तराखंड में किसानों को मिलेगा	16
अंत्योदय!समग्र विकास का मूल मंत्र	18
जमीनी लोकतंत्र की आवश्यकता	23
सबका साथ सबका विकास की	28
पंडित दीनदयाल के सपनों को साकार	29
घर में उपेक्षित हिंदी	31
अक्टूबर माह के कृषि कार्य	36
कृषि कानूनों का एक साल !	38

अपनी बात

ग्राम भारती का अन्त्योदय और पंचायत विशेषांक आपके सम्मुख है। विशेषांक एकात्म मानव दर्शन के सृजक और अन्त्योदय के प्रणेता पं.दीनदयाल उपाध्याय को समर्पित है। इसमें उनके 'एकात्म मानव दर्शन' और 'अन्त्योदय' के सूत्र पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। इस विषय पर कई आलेख संकलित किये गए हैं। विधान परिषद् सदस्य और शिक्षाविद डा. जयपाल सिंह 'व्यस्त' का विशेष साक्षात्कार प्रकाशित किया गया है। इसमें अन्त्योदय की भावना को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है। 'अन्त्योदय' का लक्ष्य कैसे प्राप्त किया जा सकता है? इस पर विशेषांक को केन्द्रित किया गया है। दीनदयाल जी का सम्पूर्ण चिंतन समाज के अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति के उत्थान पर केन्द्रित है,और अंतिम पायदान का व्यक्ति आज गांव का निवासी, किसान,कामगार और खेतिहर मजदूर है। इनके जीवन में कैसे खुशहाली आये, कैसे समाज की मुख्यध ाारा में शामिल हों। इसलिए इस विशेषांक को पंचायतों को समर्पित करने का प्रयास किया गया है। इसमें पंचायतों की पर्याप्त सामग्री प्रस्तुत की गई है। नवीन दायित्व ग्रहण करने वाले पंचायत प्रतिनिधियों का साक्षात्कार और विशेष रिपोर्ट प्रस्तुत की गई है। विशेषांक में प्रयास किया गया है कि स्थायी स्तम्भ पूर्ववत जारी रहें। इसलिए खेत-खलिहान में अक्टूबर माह के कृषि कार्य प्रस्तुत किये गए हैं। आशा है ग्राम भारती का यह 'अंत्योदय और पंचायत विशेषांक' आपको पसंद आएगा। इसमें प्रकाशित सामग्री पर प्रतिक्रियाएं और सुझाव अवश्य भेजें। ये हमारे लिए अमूल्य धरोहर हैं, आपके सुझावों और विचारों से हम 'ग्राम भारती' में उत्तरोत्तर सुधार करते रहेंगे। हम गांव, किसान और गरीब की पत्रकारिता को समर्पित हैं। हमारा पूरा प्रयास है कि उस व्यक्ति की आवाज बनें जिसकी पहुंच शासन, सत्ता प्रतिष्ठान तक पहुंचना आसान नहीं होती। इसलिए ग्राम भारती को अन्त्योदय की भावना से जोड़ते हुए प्रकाशित किया जा रहा है। संसाधन का अभाव है, सरकारी विज्ञापन का कोई सहयोग नहीं है। इसके बावजूद हम इसे प्रकाशित कर पा रहे हैं, तो यह आप सभी की शुभेच्छा का ही प्रतिफल है। हमारी टीम, समाज के सहयोगी और 'उत्तर प्रदेश समाचार सेवा' के संवाददाताओं ने हमें यह बल दिया है कि हम ग्राम भारती का सतत प्रकाशन कर पा रहे हैं। उम्मीद करते हैं कि इसे आगे भी इसी तरह जारी रखेंगे। हम अपने पाठकों और ग्रामीण लोकतंत्र के प्रहरियों, समाज के सक्षम व्यक्तियों से अपील करते हैं, ग्राम भारती के प्रकाशन में अपना सहयोग दें। आपका सूक्ष्म से सूक्ष्म सहयोग हमारे लिए विशाल शक्तिपुंज बनेगा। आप विज्ञापन के रूप में, ग्राहक सदस्यता शुल्क के रूप में अथवा व्यक्तिगत सहयोग कर सकते हैं। हम पत्रिका में अपने बैंक खाते का पूर्ण विवरण प्रकाशित करते हैं। आप सीधे खाते में अपना सहयोग भेज सकते हैं। आपके इस सहयोग से हम ग्राम भारती को ग्रामीण पत्रकारिता का एक सशक्त अभियान बनाने में सफल होंगे।

सादर,

(सर्वेश कुमार सिंह)
सम्पादक

संपादकीय

अन्त्योदय का लक्ष्य और पंचायतें

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का सपना था विकास के अंतिम पायदान पर बैठे व्यक्ति का समग्र विकास। उसका सामाजिक, आर्थिक और नैतिक मूल्यों के साथ-साथ उत्थान और सम्मानजनक जीवन जीने का अधिकार । पंडित जी का 'अन्त्योदय दर्शन' भारतीय संस्कृति के 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः' की भावना से उपजा था। सर्वसमाज और विश्व कल्याण की भावना वाली भारतीय संस्कृति ने वह दर्शन दीनदयाल जी के माध्यम से अवतरित किया था, जिसे कहा गया 'एकात्म मानव दर्शन'। पंडित जी के ये सिद्धान्त और सूत्र साकार करने का आज उपयुक्त समय है। 'अन्तयोदय' के लक्ष्य को प्राप्त करने में जहां केन्द्र और राज्य सरकारों की महती भूमिका है, वहीं त्रि-स्तरीय पंचायत व्यवस्था इसमें बड़ा योगदान कर सकती है। हमारे देश की पंचायत व्यवस्था में अब सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व है। सभी जातियों, सभी समुदायों और महिलाओं को भी उचित अवसर मिले हैं। इसलिए जिन लोगों का उत्थान होना है, या जो लोग वंचित हैं, निर्बल हैं, दुर्बल हैं, उनके सर्वाधिक समीप तो पंचायत के प्रतिनिधि ही हैं। इसलिए उनके दुख-दर्द को इनसे ज्यादा और कोई नहीं जान सकता है। इनमें कितने ही प्रतिनिधि और महिलाएं ऐसी भी हैं जो स्वयं कभी निर्बल रहीं हैं, समाज के अंतिम पायदान पर रही हैं। इसलिए 'अंत्योदय' के लक्ष्य में सर्वाधिक भागीदारी हमारी पंचायतों की होने वाली है। ये पंचायतें ही पं. दीनदयाल उपाध्याय के 'अंत्योदय के लक्ष्य' को हासिल करेंगी। आवश्यकता है केन्द्र और राज्य सरकारों की ओर से बनने वाली योजनाओं के समुचित क्रियान्वयन और अनुश्रवण की और धन आबंटन के बाद उसके सदुपयोग की। हमारे समाज का वह व्यक्ति जिसकी कल्पना दीनदयाल जी ने अन्त्योदय के लक्ष्य के रूप में की है, वह शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, भरपेट भोजन, स्वच्छ पेयजल, स्वच्छ वातावरण और सामाजिक सम्मान का आकांक्षी है। इन अन्त्योदय लक्षित और आकांक्षीजनों का उत्थान 'मानवदर्शन' की भावना से ही संभव है। आज की केन्द्र सरकार ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में जो योजनाएं बनायी हैं, वे वास्तव में अन्त्योदय की भावना से ही प्रेरित हैं और उसी लक्ष्य प्राप्ति के लिए अग्रसर हैं। चाहे गांवों में स्वच्छता अभियान हो, या खुले में शौच से मुक्त भारत की कल्पना अथवा हर-घर नल योजना। सभी गांवों को प्रकाशयुक्त करने की विद्युतीकरण की योजना, गरीब को निशुल्क राशन। ये सभी अन्त्योदय की भावना से ही प्रेरित हैं। महत्वपूर्ण यह भी है कि इन सभी योजनाओं को क्रिन्यान्वित करने का दायित्व सरकार ने ग्राम पंचायतों को सौंपा है। ग्राम पंचायतों को सीधे 'डिजिटल माध्यम' से धन पहुंचाकर लक्ष्य हासिल किया जा रहा है। देश के इतिहास में यह पहली बार हो रहा है कि 'जल-जीवन मिशन' के माध्यम से हर घर में पानी पहुंचाने के लिए भारत सरकार ने ग्राम पंचायतों को लगभग सवा दो लाख करोड़ रूपये की सहायता १५वें वित्त आयोग की संस्तुति पर दी है। इतना ही नहीं आयुष्मान भारत, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, फसल बीमा योजना। ये सभी अन्त्योदय के लक्ष्य के सोपान हैं। इन योजनाओं की सफलताओं और शत-प्रतिशत लाभ से ही दीनदयाल जी का अन्त्योदय का सपना साकार होगा। करीब चालीस साल पहले जिन मनीषी, राजनीतिज्ञ और श्वेतवेष धारी संत पं. दीनदयाल उपाध्याय ने एक सपना देखा, 'अन्त्योदय' उसे श्री नरेन्द्र मोदी साकार कर रहे हैं।

शांति मंत्र

ऊं भद्रं कर्णेभिः, श्रृणुयाम देवाः
भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवांसस्तनूभिः
व्यशेम देवहितं यदायुः!!
ऊं शांति। ऊं शांति। ऊं शांति।

अर्थ-हे देवों हम कानों से कल्याणकारक वचन सुनें, हे पूजनीय देवो हम आंखों से कल्याणकारक दृश्य देखें। जब तक हमारी आयु होगी, तब तक सुदृढ़ शरीरावयवों से युक्त होकर, हम दिव्य विबुधों के गुणों का वर्णन गाते रहें।
व्यक्ति में शांति, राष्ट्र में शांति और विश्व में शांति।

(माण्डूक्य उपनिषद्, अथर्ववेदीय)

ग्राम भारती के स्वतत्रता दिवस और पंचायत विशेषांक का विमोजन

सिर्फ नारा न रहे कृषि और किसान पत्रकारिताः सुरेश कुमार खन्ना

शिक्षक दिवस पर उत्कृष्ट शिक्षकों का सम्मान, विनोबा सेवा आश्रम में हुआ विमोचन

शाहजहांपुर, ०५ सितंबर २०२१ (उ.प्र.समाचार सेवा)। प्रदेश के वित्त, संसदीयकार्य एवं चिकित्सा शिक्षा मंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने कहा है कि किसान और कृषि पत्रकारिता सिर्फ नारा न रहे, यह वास्तवकिता में साकार हो। सकारात्मक पत्रकारिता देश और समाज की दिशा को बदल सकती है। इसलिए जो भी सामग्री प्रकाशित हो वह उपयोगी होनी चाहिए। श्री खन्ना ने यह विचार रविवार को विनोबा भावे सेवा आश्रम वनतारा में आयोजित ग्राम भारती के 'स्वतंत्रता दिवस और पंचायत विशेषांक' के विमोचन समारोह में मुख्य अतिथि पद से व्यक्त किये।

विमोचन समारोह में उन्होंने कहा कि सभी समाचार पत्रों में लेख और समाचार प्रकाशित होते हैं, इसमें ग्रामीण समाचार भी प्रकाशित होते हैं। लेकिन, जो भी सामग्री प्रकाशित हो वह उपयोगी हो, मनोरंजक हो। लक्ष्य को प्राप्त करने वाली हो, लोगों की समस्त जिज्ञासाओं को शांत करने वाली हो। इसलिए जो भी सामग्री प्रकाशित की जाए, वह चिंतन- मनन के बाद प्रकाशित की जानी चाहिए।

श्री खन्ना ने कहा कि आज भी ग्रामीण क्षेत्र और किसान नई तकनीक अपनाने के प्रति उत्साह नहीं दिखाते हैं, एक तरह का भय किसानों के बीच है नई तकनीक के प्रति, इसे समाप्त करना होगा। नई तकनीक और नई खोजों को अपनाकर किसानों को उपज बढानी पड़ेगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश में २ करोड़ ४८ लाख लोगों को सम्मान निधि मिल रही है। लेकिन, कुछ लोग किसानों को गुमराह कर रहे हैं, और चार पांच सौ लोग आंदोलन के नाम पर दिल्ली बार्डर पर बैठे हैं। यह कतई भी उचित नहीं है। कई बार सरकार ने वार्ता भी की। किन्तु ये लोग वार्ता से भाग जाते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ दोनों देश के लिए, किसानों के लिए समर्पित होकर काम कर रहे हैं। उनका लक्ष्य है कि कैसे किसानों के जीवन में खुशहाली आये। लेकिन, कुछ भ्रमित किये गए लोग हैं जो आंदोलन कर रहे हैं। इस आंदोलन को मीडिया महत्व दे रहा है। जबकि मंशा स्पष्ट है। मुद्दों को प्रभावित करने में मीडिया का बहुत बड़ा रोल है। मीडिया का रोल सार्थक होना चाहिए। एक बयान जारी हो गया कि वैक्सीन बीजेपी की

है, इसे मत लगवाओ। इसका बहुत बड़ा प्रभाव हुआ, लोग डर गए और गांव में जब वैक्सीनेशन की टीमें पहुंचीं तो लोग भाग गए, यहां तक कि नदी में भी कूद गए। इस बयान का दुष्प्रभाव हुआ। जिससे वैक्सीनेशन कार्यक्रम प्रभावित हुआ। अभी तक ७ करोड़ ७५ लाख वैक्सीन यूपी में लगी है। अगर यह बयान न आया होता और दुष्प्रचार नहीं हुआ होता तो वैक्सीन अभी तक १० करोड़ लोगों को लग चुकी होती। क्या वे लोग इसकी नैतिक जिम्मेदारी लेंगे, जिन्होंने नकारात्मक बयान दिया या जिन्होंने उसे प्रचारित किया।

श्री खन्ना ने कहा कि आलोचना करना बहुत आसान है। किसी को जोड़ना और दिशा तय करना बहुत मुश्किल काम है। कृषि और ग्रामीण पत्रकारिता की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि किसान पत्रकारिता सिर्फ नारा न रहे। व्यवहार से, मन, वचन और कर्म से भी किसान और ग्रामीण पत्रकारिता के साथ न्याय होना चाहिए। इससे समाज को भी जोड कर चलना चाहिए। श्री खन्ना ने कहा कि विश्वसनीयता एक दिन में नहीं आती। उन्होंने कहा कि आज शिक्षक दिवस है। डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्नदिवस भी है। उनकी विश्वनीयता थी। वे चौदह विषयों में एम. ए थे। प्रकाण्ड विद्वान थे। यह देश चाणक्य, चरक, पाणिनी, पतंजलि और गांधी का है। विश्व को ये महापुरुष भारत की देन हैं। डा.राधाकृष्णन उसी श्रंखला में आते हैं। सुभाष चन्द्र बोस ने मात्र ३२ हजार राष्ट्रभक्तों को लेकर एक सेना खड़ी कर दी। जिसका नाम आजाद हिन्द फौज रखा गया था। ये सभी महापुरुष १९वीं शताब्दी में जन्मे, उस शताब्दी की देन हैं।

श्री खन्ना ने कहा कि गुरु शिष्य का रिश्ता भारत में सात हजार साल पुराना है। भगवान राम ने त्रेता में कहा था, कि उन्होंने गुरु वशिष्ठ की शिक्षा से ही रावण को पराजित किया था। हमारा देश संस्कृति प्रधान है। समस्त वेदों और उपनिषदों की चर्चा करते हुए श्री खन्ना ने कहा कि गीता में इनका सार समाहित है। इसलिए हमें अपनी संस्कृति पर गर्व करना चाहिए। हमारी संस्कृति में मानवता सर्वोपरि है। इसके पूर्व मंत्री श्री सुरेश कुमार खन्ना ने 'ग्राम भारती' के 'स्वतंत्रता दिवस और पंचायत विशेषांक' के विमोचन पर शुभकामनाएं दीं।

ग्रामोदय से ही होगा राष्ट्रोदयः डा. जयपाल सिंह 'व्यस्त'

विमोचन और शिक्षक सम्मान समारोह के विशिष्ट अतिथि बरेली-मुरादाबाद खण्ड स्नातक क्षेत्र से विधान परिषद सदस्य और अधिष्ठाता डा. जयपाल सिंह 'व्यस्त' ने कहा कि महात्मा गांधी ने ग्रामोदय, विनोबा भावे ने सर्वोदय, दीनदयाल उपाध्याय ने अन्त्योदय और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रोदय को ध्येय बनाया है। अब लक्ष्य 'राष्ट्रोदय' है। 'अन्त्योदय से ग्रामोदय' और 'ग्रामोदय से राष्ट्रोदय' होगा। राष्ट्रोदय भी ग्रामोदय से ही होगा।

आज शिक्षक दिवस भी है। डा. राधाकृष्णन का जन्म दिवस है। वे संस्कृति और संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। डा. व्यस्त ने बताया कि डा राधाकृष्णन ने अपना

जन्मदिवस मनाने के लिए मना किया था। उन्होंने कहा था कि - मैं एक शिक्षक हूं और शिक्षक से ही राष्ट्रपति के पद तक पहुंचा हूं। मेरा जन्म दिवस न मनाया जाए, बल्कि इस दिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाए और शिक्षक को समर्पित किया जाए। दूसरी और डा एपीजे अब्दुल कलाम ने राष्ट्रपति पद से हटने के बाद शिक्षक बनने की इच्छा व्यक्त की और कहा कि वे अब शिक्षक बनेंगे। इस तरह एक व्यक्ति 'शिक्षक से राष्ट्रपति' और दूसरा 'राष्ट्रपति से शिक्षक' बना।

डा. व्यस्त ने कहा कि शिक्षक और कृषक दोनों राष्ट्र निर्माता हैं। आज 'ग्राम भारती' के विशेषांक का विमोचन हो रहा है। यह पत्रिका 'ग्रामोदय और गांवों' की प्रगति के लिए उपयोगी साबित होगी। उन्होंने पत्रिका के प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं दीं। साथ ही कार्यक्रम स्थल के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जिस स्थान पर यह कार्यक्रम हो रहा है, वह संत विनोबा जी की स्थली है। उन्ही के शिष्य राममूर्ति जी ने नई शिक्षा नीति १९८६-८७ का परीक्षण किया था। साथ ही कहा था कि नई शिक्षा नीति बहुत अच्छी है लेकिन, इसमें 'वैल्यू एडिशन' की आवश्यकता है।

विधान परिषद सदस्य और अधिष्ठाता डा. जयपाल सिंह 'व्यस्त' ने कहा कि महात्मा गांधी ने ग्रामोदय, विनोबा भावे ने सर्वोदय, दीनदयाल उपाध्याय ने अन्त्योदय और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रोदय को ध्येय बनाया है। अब 'लक्ष्य राष्ट्रोदय' है। 'अन्त्योदय से ग्रामोदय' और 'ग्रामोदय से राष्ट्रोदय' होगा।

सरकार को भटकाव से परिचित कराएं पत्रकारः डा.पवन सक्सेना

विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ पत्रकार, बरेली के उपजा प्रेस क्लब के अध्यक्ष डा. पवन सक्सेना ने कहा कि खबर वही है, जो छिपायी जाती है। जिसे सरकार बताती है वह तो सिर्फ प्रचार है। उसे खबर नहीं कहा जा सकता है। आज आवश्यकता है कि छिपायी जा रही खबर को खोज कर सामने लाया जाए। सरकार खबरों को छिपा रही है। पत्रकारों का यह दायित्व है कि उन मुद्दों को सामने लाएं जो जनहित से जुड़े हैं, आम आदमी की समस्याओं को भी सामने लाना चाहिए। सरकार के प्रचार से पत्रकारों को प्रभावित नहीं होना चाहिए। उन्हें निष्पक्ष होकर काम करना चाहिए। पत्रकारों को सरकार को यह भी बताना चाहिए कि आप कहां भटक रहे हैं।

डा सक्सेना ने कहा कि 'ग्राम स्वराज्य' की परिकल्पना इस आश्रम से निकलती है। उन्होंने कहा कि यह संयोग ही है

कि एक ओर 'ग्राम भारती' और दूसरी ओर विनोबा जी का 'ग्राम स्वराज्य'। विशिष्ट अतिथि जिला पंचायत शाहजहांपुर के पूर्व अध्यक्ष अजय यादव ने कहा कि पत्रिका ग्रामीण विषयों और कृषि के लिए समर्पित है। यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि कोई संस्थान 'कृषि और ग्रामीण' विषयों के लिए पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। उन्होंने पत्रिका के प्रकाशन पर शुभकामनाएं दीं।

ग्राम भारती, एक आन्दोलनः सर्वेश कुमार सिंह

ग्राम भारती के संपादक और उ. प्र समाचार सेवा के प्रबंध संपादक सर्वेश कुमार सिंह ने पत्रिका की विषय वस्तु और प्रकाशन पर प्रकाश डाला। श्री सिंह ने कहा कि ग्राम भारती एक पत्रिका नहीं बल्कि ग्रामीण और कृषि पत्रकारिता का एक आंदोलन है। यह पत्रिका वर्ष २०१० से अनवरत प्रकाशित हो रही है। उन्होने बताया कि हम पत्रकारिता में ग्रामीण और कृषि विषयों का कंटेंट बढाने पर कार्य कर रहे हैं। अभी पत्रकारिता में मात्र २० प्रतिशत से भी कम कंटेट ग्रामीण और कृषि विषयों का है।

उन्होंने कहा कि देश के प्राण गांव में बसते हैं। गांव विकसित होंगे तभी भारत सशक्त और सबल होगा। हमारा संकल्प वाक्य भी यही है 'श्रेष्ठ भारत-सर्वोच्च भारत'। उन्होंने कहा कि कोरोना काल में जब देश की अर्थव्यवस्था की विकास दर शून्य से भी नीचे चली गई थी तब भी कृषि विकास दर धनात्मक थी। कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिक सुरेश चन्द्र मिश्रा ने कहा कि पत्रिका में किसानों के लिए उपयोगी सामग्री का प्रकाशन प्रत्येक अंक में होना चाहिए। किसानों के लिए जरूरी सलाह, कृषि में हो रही नई खोजों की भी जानकारी इस पत्रिका के माध्यम से दी जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि 'पशु' ग्रामीण अर्थव्यस्था का आधार है। इसलिए पशुपालन पर उपयोगी जानकारी ग्रामीण जनता को दी जाए।

कार्यक्रम में ग्राम भारती और उ.प्र.समाचार सेवा के शाहजहांपुर जिला ब्यूरो के प्रमुख संजीव कुमार गुप्ता, ब्लाक प्रमुख राजाराम ने भी विचार व्यक्त किये।

ग्राम सभा की ओर जाने को तत्पर हों: सुरेश भैया

समारोह की अध्यक्षता कर रहे विनोबा सेवा आश्रम के प्रबंधक सुरेश भैया जी ने कहा कि संत विनोबा भावे कहते थे कि आज हर व्यक्ति राज्य सभा और लोक सभा में जाना चाहता है 'ग्राम सभा' में कोई नहीं जाना चाहता। आवश्यकता है कि ग्राम सभा की ओर जाने के लिए तत्पर हों।

अंत में वरिष्ठ पत्रकार और एनयूजे के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य मो. इरफान ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ पत्रकार ओमकार मनीषी ने किया। समारोह में ग्राम भारती के 'स्वतंत्रता दिवस और पंचायत विशेषांक' का विमोचन कैबिनेट मंत्री सुरेश कुमार खन्ना, विधान परिषद् सदस्य डा. जयपाल सिंह व्यस्त, सुरेश भैया जी, डा. पवन सक्सेना, संपादक सर्वेश कुमार सिंह, मो. इरफान, संजीव कुमार गुप्ता, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष अजय यादव, ओंकार मनीषी ने किया।

शिक्षक सम्मान

शिक्षक दिवस के अवसर पर कार्यक्रम में शिक्षकों की उत्कृष्ट सेवा के लिए उन्हें सम्मानित किया गया। इस क्रम में डा. जयपाल सिंह व्यस्त, प्रधानाचार्य परिषद् के अध्यक्ष आरबीएम इंटर कालेज के प्रधानाचार्य के के शुक्ला, विनोबा सेवा आश्रम विद्यापीठ के प्रधानाचार्य ओमपाल सिंह, ग्रामीण क्षेत्र के खिलाड़ी दौड़ में प्रदेश स्तरीय स्वर्ण पदक विजेता अरबाज खान, प्रधानाचार्या सुश्री श्रद्धा टंडन का सम्मान किया गया।

कृषि उद्यान में उत्पादन बढ़े, प्रोसेसिंग यूनिट जरुरीः मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी

सुगंधी पौधे, जड़ी बूटी, फल व सब्जियां आर्थिक आधार !

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सचिवालय में कृषि एवं उद्यान आदि विभागों की समीक्षा करते हुए जोर दिया कि कृषि एवं औद्यानिकी की योजनाओं से स्वरोजगार को बढ़ावा एवं पलायन रोकने में मदद मिलती है। उन्होंने कहा - परम्परागत उत्पादों के साथ फल एवं सब्जी उत्पादन पर विशेष ध्यान देने और प्रोसेसिंग यूनिटों की स्थापना भी की जाए। कृषि व उद्यान उत्पादों की मार्केटिंग के लिए ठोस और प्रभावी कार्य योजना अविलम्ब तैयार की जाए।

परम्परागत कृषि विकास योजना, लघु कृषक समूह प्रमाणीकरण के कलस्टर तैयार करने में भारत सरकार से पुनः अनुरोध किया जाए। मुख्यमंत्री ने चार जनपदों में 'मधु ग्राम योजना' बनाने व टूरिज्म को बढ़ावा देने पर भी बल दिया। किसानों को गुणवत्ता युक्त बीज एवं खाद आसानी से उपलब्ध रहें तथा मौसमानुकूल नर्सरी विकसित करने के निर्देश दिए। सुगंधी पौधों के एरोमा पार्क के विकास में तेजी, जड़ी-बूटी एवं हर्बल उत्पादन को स्वरोजगार से जोड़ने की कार्य योजना बनाने के निर्देश मुख्यमंत्री धामी ने दिए।

ग्राम भारती

कृषि और ग्रामीण पत्रकारिता का एक आन्दोलन है अमूल्य योगदान दें।

विज्ञापन दर

अंतिम पृष्ठ (रंगीन)	रु 30,000.00
भीतरी पृष्ठ (रंगीन)	रु 25,000.00
भीतरी पृष्ठ (श्वेत श्याम)	रु 10,000.00
भीतरी आधा पृष्ठ (श्वेत श्याम)	रु 05,000.00

A/c Name " GRAM BHARTI " Bank of Baroda, A/c No.: 77140200000560
IFSC Code: BARB0VJHAZR, Branch : Sapru Marg, Hazratganz, Lucknow-226001

सीतापुर पंचायत चुनाव में भाजपा बनी 'ताकतवर'!!

आलोक कुमार वाजपेयी

सीतापुर। पंचायत चुनाव में चुनावी मुकाबला भाजपा और सपा के लिए बड़ी चुनौती बना रहा। चुनाव में जो कुछ हुआ, वह तो सबने ही देखा। ब्लाकों की कुर्सी पर राज करने के लिए काफी घमासान हुआ। हथगोले और गोलियों की तड़तड़ाहट के बीच चुनावी जंग में सत्ताधारी भाजपा 'बाहुबली' बनकर उभरी।

जिला पंचायत अध्यक्ष के साथ ही १५ ब्लाकों में उसके उम्मीदवार ही प्रमुख बने। चुनावी परिदृश्य पर यदि नजर डालें तो देखने को मिलता है कि ऐन वक्त पर भाजपा का दामन थामने वालों की गाड़ी भी पूरी रफ्तार से दौड़ी। बिसवॉ के पूर्व सपा विधायक रामपाल यादव की पत्नी शांति यादव बिसवां की ब्लाक प्रमुख बन गईं। रामपाल के बारे में तो कहा जा रहा था कि पहले उन्होंने पत्नी के लिए भाजपा में आवेदन किया था। इसके बाद टिकट की लालसा में ही खुद भी भाजपा का दामन थाम लिया। रामपाल खेमा इसी से राजनीति में फिर से अच्छे दिन की आस लगाए हैं। सपा के लिहाज से देखें तो यह चुनाव आगामी २०२२ के विधानसभा चुनाव के लिए सबक बन गया है। चूँकि जनपद के ब्लाक महमूदाबाद, पहला और सिंधौली में सपा को जीत मिल सकी है। महमूदाबाद विधायक नरेंद्र सिंह वर्मा अपना गढ़ और सपा की इज्जत बचाने में कामयाब रहे। सिंधौली में रामबख्श रावत पहले भाजपा से टिकट के दावेदार थे। बात नहीं बनी तो सपा में शामिल हुए और जीतने में भी कामयाब हुए।

जनपद के १६ विकासखंडों में से ११ में भाजपा प्रत्याशी निर्विरोध ब्लाक प्रमुख निर्वाचित हुए तथा चार ब्लाकों सकरन, पिसावां, मछरेहटा, परसेंडी में भाजपा की ही विजय हुई। ब्लाक महमूदाबाद, सिंधौली व पहला में सपा के प्रत्याशी विजयी रहे। मछरेहटा ब्लाक की प्रतिष्ठापूर्ण सीट पर भाजपा विधायक रामकृष्ण भार्गव की पत्नी मिथिलेश कुमारी ने ३२

वोट से विजय पताका फहराई है। ब्लाक कसमंडा के प्रमुख पद पर निर्दलीय प्रत्याशी की एकतरफा जीत हुई है। यहॉ नामांकन के समय आठ जुलाई को सत्तापक्ष व निर्दलीय प्रत्याशी के समर्थकों के बीच हथगोले व गोली चलने से काफी बवाल हुआ था। हरगांव, रामपुर मथुरा में भी सत्तापक्ष व विपक्ष के बीच कड़ी तकरार हुई थी। इन मामलों से सबक लेते हुए पुलिस ने मतदान के लिए कड़े सुरक्षा बंदोबस्त किए थे। जिससे मतदान व मतगणना में किसी भी प्रकार का व्यवधान न उत्पन्न हो सके। सिंधौली में भाजपा प्रत्याशी रोहित भारती को हार का मुंह देखना पड़ा। यहां प्रमुख पद को लेकर भाजपा से ही पूर्व विधानसभा प्रत्याशी रहे रामबक्श रावत व रोहित भारती टिकट मांग रहे थे। पार्टी ने रोहित पर भरोसा जताते हुऐ प्रत्याशी बनाया था। रामबक्श रावत टिकट न मिलने से

नाराज होकर समाजवादी पार्टी में शामिल हो गए। सपा ने उन्हें प्रत्याशी बनाया। प्रमुख पद के लिए १०१ क्षेत्र पंचायत सदस्यों ने मतदान किया। रामबक्श रावत को ६० मत, रोहित भारती को ३६ मत मिले। निर्दलीय सोनू को दो मत से संतोष करना पड़ा। जिससे सपा प्रत्याशी रामबखश रावत ने भाजपा प्रत्याशी को २१ मतों से पराजित किया। विकासखंड परसेंडी में कड़े मुकाबले में भाजपा प्रत्याशी राजेंद्र प्रसाद ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी गोकुल को मात्र चार मतों से पराजित किया। राजेन्द्र प्रसाद को ५७ मत प्राप्त हुए, जबकि गोकुल को ५३ मत मिले। सकरन ब्लाक में १०३ मतदाताओं में से भाजपा प्रत्याशी मिथिलेश कुमार को ५८ मत मिले, जबकि सपा की शिव

कांति बाजपेई को ४४ मत प्राप्त हुए। एक मत निरस्त किया गया। ब्लाक पिसावां में भाजपा के मिथलेश यादव एक मत से विजयी रहे। उन्हें ११२ मतों में से ५६ मत मिले। सपा की साधना वर्मा को ५५ मत प्राप्त हुए। यहां एक मत अवैध पाया गया। महमूदाबाद में सपा के मुकेश वर्मा विजयी रहे। इन्हें ८३ मतों में से ४६ वोट मिले, जबकि भाजपा की सुशीला वर्मा को ३० मत प्राप्त हुए। तीन मत अवैध पाए गए। पहला ब्लाक में सपा के रावेन्द्र उर्फ अजय यादव मात्र एक वोट से प्रमुख बने। उन्हें ६५ मतों में से ४८ वोट प्राप्त हुए हैं। भाजपा प्रत्याशी प्रवीण वर्मा को ४७ वोट मिले। निर्दलीय उपेन्द्र कुमार को एक भी मत नहीं मिला। विकासखंड मछरेहटा की प्रतिष्ठापूर्ण सीट पर मिश्रिख से भाजपा विधायक विधायक रामकृष्ण भार्गव की पत्नी मिथिलेश कुमारी पासी ३२ मतों के अंतर से विजय हासिल की। इनको ६५ मतों में से ६२ मत हासिल हुए। सपा समर्थित पूजा देवी को ३० मत ही मिले। दो मत अवैध पाए गए। निर्दलीय रीमा सिंह का खाता नहीं खुला। कसमंडा ब्लाक में निर्दलीय मुन्नी देवी ७६ वोट पाकर एक तरफा विजयी रहीं। यहां से भाजपा की गुड्डी देवी को १०२ मतों में से मात्र २३ वोट मिले। तीन मत अवैध पाए गए। जनपद के ब्लाक एलिया, बेहटा, बिसवां, गोंदलामाऊ, हरगांव, खैराबाद, लहरपुर, महोली, मिश्रिख, रामपुर मथुरा व रेउसा से भाजपा के निर्विरोध प्रत्याशी प्रमुख बने। ब्लाक मछरेहटा, सकरन, परसेंडी व पिसावां से भाजपा के प्रत्याशी प्रमुख के रूप में निर्वाचित हुए। ब्लाक सिंधौली, महमूदाबाद, पहला से सपा के प्रत्याशी प्रमुख के रूप में

चुनावी परिदृश्य पर यदि नजर डालें तो देखने को मिलता है कि ऐन वक्त पर भाजपा का दामन थामने वालों की गाड़ी भी पूरी रफ्तार से दौड़ी। बिसवॉ के पूर्व सपा विधायक रामपाल यादव की पत्नी शांति यादव बिसवां की ब्लाक प्रमुख बन गईं। रामपाल के बारे में तो कहा जा रहा था कि पहले उन्होंने पत्नी के लिए भाजपा में आवेदन किया था। इसके बाद टिकट की लालसा में ही खुद भी भाजपा का दामन थाम लिया। रामपाल खेमा इसी से राजनीति में फिर से अच्छे दिन की आस लगाए हैं।

निर्वाचित हुए तथा ब्लाक कसमंडा से निर्दलीय प्रत्याशी प्रमुख के रूप में निर्वाचित हुए। इस प्रकार सत्तापक्ष का १६ में से १५ सीटों पर कब्जा हो गया है। सपा को मात्र तीन सीटों पर ही संतोष करना पड़ा। जबकि एक ब्लाक में निर्दलीय ने विजय हासिल की है।

श्रद्धा सागर बनीं भाजपा की जिला पंचायत अध्यक्ष

जिला पंचायत अध्यक्ष के चुनाव में कांटे की टक्कर में भाजपा ने सपा को चारों खाने चित करके प्रतिष्ठा की कुर्सी पर कब्जा जमा लिया है। कुल ७६ सदस्यों में से ५६ मत भाजपा की श्रद्धा सागर को, २२ मत सपा की अनीता राजवंशी को तथा एक मत अवैध घोषित किया गया। इस प्रकार से भाजपा की श्रद्धा सागर ने जिला पंचायत की कुर्सी प्राप्त करने में सफलता अर्जित की। भाजपा के जिलाध्यक्ष अचिन मेहरोत्रा ने अपनी पूरी ताकत चुनाव जीतने में लगा दी थी। मतदान के दिन जब मतदान स्थल पर १५ गाड़ियों के काफिले के साथ जिलाध्यक्ष श्री मेहरोत्रा ४५ सदस्यों की बारात के साथ दिखे थे तभी ये कयास लगाये जाने लगे थे कि चुनाब भाजपा के पक्ष में ही एकतरफा हो गया है और भाजपा प्रत्याशी श्रद्धा सागर ही अध्यक्ष बनेगी। बतातें चलें कि १५ वर्षो बाद भाजपा का प्रत्याशी इस कुर्सी तक पहुँच सका है। वर्ष २००० में भाजपा के जिलाध्यक्ष रहे स्व० प्रकाश नाथ मेहरोत्रा (जो वर्तमान भाजपा जिलाध्यक्ष के पिता व दैनिक जागरण के पत्रकार), के नेतृत्व में भाजपा समर्थित प्रत्याशी इस कुर्सी पर आसीन हुआ था।

भाजपा की श्रद्धा सागर ने जिला पंचायत की कुर्सी प्राप्त करने में सफलता अर्जित की। भाजपा के जिलाध्यक्ष अचिन मेहरोत्रा ने अपनी पूरी ताकत चुनाव जीतने में लगा दी थी। मतदान के दिन जब मतदान स्थल पर १५ गाड़ियों के काफिले के साथ जिलाध्यक्ष श्री मेहरोत्रा ४५ सदस्यों की बारात के साथ दिखे थे तभी ये कयास लगाये जाने लगे थे कि चुनाब भाजपा के पक्ष में ही एकतरफा हो गया है और भाजपा प्रत्याशी श्रद्धा सागर ही अध्यक्ष बनेगी। बतातें चलें कि १५ वर्षो बाद भाजपा का प्रत्याशी इस कुर्सी तक पहुँच सका है।

खेती और स्वावलंबन

पं. दीनदयाल उपाध्याय

(संकलित-एकात्म अर्थनीति)

कोई भी राष्ट्र योग्य ढंग से नियोजन करता हो और प्रकृति की भी सामान्य कृपा हो तो अन्न के उत्पादन में स्वावलंबी हो सकता है। वैसा करना आवश्यक भी होता है। खेती की उपेक्षा करते हुए विशालकाय औद्योगीकरण कई बार घातक सिद्ध होता है। ऐसा करने से खेती पिछड़ जाती है और स्वावलंबन भी ढह जाता है।

भारत में कृषि व्यवस्था कैसी हो, किसानों की मूलभूत समस्याओं का समाधान कैसे हो ? इन विषयों पर पं. दीनदयाल उपाध्याय स्वदेशी दृष्टि से चिंतन करते थे। उन्होंने खेती के स्वामित्व, उपज के मूल्य और खेती की लागत पर गहनता से विचार किया है। भारतीय खेती को उन्नत करने के लिए उनके एकात्म दर्शन और अंत्योदय में सूत्र समाहित हैं।

अर्थव्यवस्था की सीढ़ियाः खेती

अर्थव्यवस्था में अर्थायाम की व्यवस्था करनी हो तो आर्थिक नियोजन के कुछ सोपान (सीढियां) निश्चित करना अवश्यक होता है। हमारे देश की प्रकृति और परिस्थिति का विचार करते हुए दीनदयाल जी का मत था कि खेती, उद्योग, परिवहन, व्यापार, और समाज सुरक्षा सेवा-यह सीढियों का क्रम सभी दृष्टियों से उपयुक्त है। सभी क्षेत्र एक दूसरे के साथ इतने जुड़े हुए हैं कि हम इनमें से किसी एक क्षेत्र का विचार अन्य क्षेत्रों को छोड़कर नहीं कर सकते।

दीनदयाल जी के विचार से अविकसित राष्ट्र तुरंत औद्योगिकीकरण के मार्ग पर न चलकर खेती का विचार करें, तभी उसके आर्थिक प्रश्नों का उत्तर प्राप्त हो सकेगा। प्रो. गुन्नार मिर्डाल और प्रो. जान सेलार जैसे विश्वविख्यात अर्थशास्त्रज्ञों के विचार भी दीनदयाल जी के विचारों के साथ इस विषय पर मेल खाते थे। ऊपर दिया सोपानों का क्रम बदलकर खेती को वरीयता ने देते हुए जिन अविकसित

दीनदयाल जी का मानना था कि हमारा देश कृषि प्रधान है। हमारी राष्ट्रीय आय में साठ प्रतिशत उत्पादन खेती से ही होता है। लगभग ७० प्रतिशत आजीविका भी कृषि क्षेत्रों से ही उपलब्ध होती है। अतः जब तक खेती का सभी अंगों से विकास नहीं होता, देश के आर्थिक प्रश्न सुलझेंगे नहीं। दीनदयाल जी ने यह भी पहचान लिया कि देश का औद्योगीकरण विस्तृत एवं पक्की नींव पर खड़ा करना हो, तो उसके लिए भी कृषि विकास को सुदृढ़ करना होगा।

राष्ट्रों ने नियोजन किया, उनके लिए अपना सच्चा आर्थिक विकास करना संभव नहीं हो सका। हमारे देश में भी अनुभव ऐसा ही रहा है। दूसरी पंचवर्षीय योजना से हमने खेती की उपेक्षा कर पश्चिमी ढंग से औद्योगीकरण पर बल दिया और आर्थिक विकास करने का प्रयास किया। किन्तु विकास के स्थान पर दरिद्रता और बेकारी में वृद्धि ही हमारे पल्ले पड़ी। कोई भी राष्ट्र योग्य ढंग से नियोजन करता हो और प्रकृति की भी सामान्य कृपा हो तो अन्न के उत्पादन में स्वावलंबी हो सकता है। वैसा करना आवश्यक भी होता है। खेती की उपेक्षा करते हुए विशालकाय औद्योगीकरण कई बार घातक सिद्ध होता है। ऐसा करने से खेती पिछड़ जाती है और स्वावलंबन भी ढह जाता है।

दीनदयाल जी का मानना था कि हमारा देश कृषि प्रधान है। हमारी राष्ट्रीय आय में साठ प्रतिशत उत्पादन खेती से ही होता है। लगभग ७० प्रतिशत आजीविका भी कृषि क्षेत्रों से ही उपलब्ध होती है। अतः जब तक खेती का सभी अंगों से विकास नहीं होता, देश के आर्थिक प्रश्न सुलझेंगे नहीं। दीनदयाल जी ने यह भी पहचान लिया कि देश का औद्योगीकरण विस्तृत एवं पक्की नींव पर खड़ा करना हो, तो उसके लिए भी कृषि विकास को सुदृढ़ करना होगा। उद्योगों की विकास पूंजी एवं कच्चे माल की आपूर्ति के साथ ही ग्राहकों की प्रभावी मांग पर भी निर्भर करता है। हमारे यहां का किसान केवल अनाज का और उद्योगों के लिए आवश्यक कच्चे माल का केवल उत्पादक ही नहीं है, वह कारखानों से निर्मित होने वाले पक्के माल का बड़ा ग्राहक भी है। किसान का उत्पादन और उसकी आय जितनी मात्रा में बढ़ेगी उतनी मात्रा में उसकी क्रयशक्ति भी बढ़ेगी। उतनी ही मात्रा में वह उद्योगों में तैयार होने वाला माल खरीद सकेगा। यह था दीनदयाल जी का इस विषय में मुख्य सूत्र।

पी.एल ४८० पर पं.नेहरु को चेताया

अनाज के उत्पादन के बारे में दीनदयाल जी का आग्रह था कि हमें स्वावलंबी बनना होगा और खेती को वरीयता देने से ही यह स्वावलंबन आ सकता है। इस बारे में हम उदासीन रहे तो कभी हमारी स्वाधीनता भी संकट में पड़ सकती है। लेकिन, १९५४ से १९६६ के बीच १२ वर्षों में देश ने करोड़ों रुपये का अन्न अमेरिका, आस्ट्रेलिया और कनाडा आदि देशों से आयात किया। अनाज के लिए भीख का कटोरा हाथ में लेकर हमारा देश दशों दिशओं में घूम रहा था। यह बात दीनदयाल जी को बहुत व्यग्र करती थी। विशेषतः एक स्वतंत्र और प्रभुसत्ता संपन्न देश के नाते भारत को चाहिए था कि अनाज के लिए स्वावलंबी होने के लिए एक प्रचंड कार्यक्रम हाथ में लेती। ऐसा करने के स्थान पर सरकार ने अनाज का प्रचण्ड आयात करने का प्रदीर्घ अवधि का अनुबंध कर डाला। इसी अनुबंध का नाम है पीएल ४८० (पब्लिक ला ४८०) दीनदयाल जी ने उसी समय चेतावनी दी थी कि ऐसे अनुबंध के कारण हमारी अर्थव्यवस्था पर विश्व की अर्थ संस्थाओं का स्थायी दबाव रहेगा।

कृषि उपज का मूल्य

किसान केवल अनाज या कच्चे माल का उत्पादक न होकर उद्योगों में बनाये जाने वाले माल का बहुत बड़ा ग्राहक भी होता है। अतः किसान को उसकी कृषि उपज का उचित भाव मिलना ही चाहिए।

जीवन वृत्तः पं. दीनदयाल उपाध्याय

जन्मः २५ सितम्बर १९१६
स्थानः ग्राम नगला चन्द्रभान, जनपद मथुरा
पुण्य तिथिः ११ फरवरी १९६८
दीनदयाल उपाध्याय नगर (तत्कालीन मुगलसराय)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के चिन्तक और संगठनकर्ता थे। भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्य थे, महामंत्री तथा अध्यक्ष रहे। भारत की सनातन विचारधारा को युगानुकूल रूप में प्रस्तुत करते हुए देश को 'एकात्म मानववाद' विचारधारा दी। वे एक समावेशित विचारधारा के समर्थक थे जो एक मजबूत और सशक्त भारत चाहते थे। राजनीति के अतिरिक्त साहित्य में भी उनकी गहरी अभिरुचि थी। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म २५ सितम्बर १९१६ को मथुरा जिले के 'नगला चन्द्रभान' ग्राम में हुआ था। उनके पिता का नाम भगवती प्रसाद उपाध्याय था। उनकी माता का नाम रामप्यारी था, जो धार्मिक प्रवृत्ति की थीं। अल्पआयु में ही उनके माता-पिता का निधन हो गया था। ८वीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उपाध्याय जी ने कल्याण हाईस्कूल सीकर, राजस्थान से दसवीं की परीक्षा में बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त किया। १९३७ में पिलानी से इंटरमीडिएट की परीक्षा में पुनः बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त किया। १९३९ में कानपुर के सनातन धर्म कालेज से बी. ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। अंगरेजी से एम. ए. करने के लिए सेंट जान्स कालेज, आगरा में प्रवेश लिया और पूर्वार्द्ध में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुये। बीमार बहन रामादेवी की सेवा शुश्रूषा में लगे रहने के कारण उत्तरार्द्ध न कर सके। बहन की मृत्यु ने उन्हें झकझोर कर रख दिया। मामाजी के बहुत आग्रह पर उन्होंने प्रशासनिक परीक्षा दी, उत्तीर्ण भी हुये किन्तु अंगरेज सरकार की नौकरी नहीं की। १९४१ में प्रयाग से बी.टी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। बी.ए. और बी.टी. करने के बाद भी उन्होंने नौकरी नहीं की। १९३७ में जब वह कानपुर से बी.ए. कर थे, अपने सहपाठी बालूजी महाशब्दे की प्रेरणा से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आये। संघ के संस्थापक डा. हेडगेवार का सानिध्य कानपुर में ही मिला। उपाध्याय जी ने पढ़ाई पूरी होने के बाद संघ का दो वर्षों का प्रशिक्षण पूर्ण किया और संघ के जीवनव्रती प्रचारक हो गये। आजीवन संघ के प्रचारक रहे।

संघ के माध्यम से ही उपाध्याय जी राजनीति में आये। २१ अक्टूबर १९५१ को डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी की अध्यक्षता में 'भारतीय जनसंघ' की स्थापना हुई। गुरुजी (गोलवलकर जी) की प्रेरणा इसमें निहित थी। १९५२ में इसका प्रथम अधिवेशन कानपुर में हुआ। उपाध्याय जी इस दल के महामंत्री बने। इस अधिवेशन में पारित १५ प्रस्तावों में से ७ उपाध्याय जी ने प्रस्तुत किये। डा. मुखर्जी ने उनकी कार्यकुशलता और क्षमता से प्रभावित होकर कहा- 'यदि मुझे दो दीनदयाल मिल जाएं, तो मैं भारतीय राजनीति का नक्शा बदल दूँ'।

१९६७ तक उपाध्याय जी भारतीय जनसंघ के महामंत्री रहे। १९६७ में कालीकट अधिवेशन में उपाध्याय जी भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। वह मात्र ४३ दिन जनसंघ के अध्यक्ष रहे। १०-११ फरवरी १९६८ की रात्रि में मुगलसराय स्टेशन पर उनकी हत्या कर दी गई। ११ फरवरी को प्रातः पौने चार बजे सहायक स्टेशन मास्टर को खंभा नं. १२७६ के पास कंकड़ पर पड़ी हुई लाश की सूचना मिली। शव प्लेटफार्म पर रखा गया तो लोगों की भीड़ में से कोई चिल्लाया- अरे, यह तो भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष दीन दयाल उपाध्याय हैं। पूरे देश में शोक की लहर दौड़ गयी?

पत्रकारिता में गहरी रुचि के चलते ही उन्होंने राष्ट्रधर्म, पांचजन्य और स्वदेश जैसी पत्र-पत्रिकाएँ प्रारम्भ की।

कृतियाँ

- दो योजनाएँ
- राजनीतिक डायरी

-राष्ट्र चिन्तन,यह पुस्तक दीनदयाल उपाध्याय द्वारा दिए गए भाषणों का संग्रह है ।

- भारतीय अर्थ नीति-विकास की एक दिशा
- भारतीय अर्थनीति का अवमूल्यन
- सम्राट चन्द्रगुप्त
- जगद्गुरु शंकराचार्य
- एकात्म मानववाद
- राष्ट्र जीवन की दिशा
- एक प्रेम कथा

(जीवन वृत्त साभारः विकीपीडिया)

उत्तराखंड में किसानों को मिलेगा शून्य प्रतिशत ब्याज पर कर्जः धन सिंह रावत

- महिला समूह भी शून्य प्रतिशत ब्याज योजना में शामिल
- ऋण वितरण के लिए आयोजित होंगे ६८३ मेले

देहरादून। उत्तराखंड के सहकारिता मंत्री डा. धन सिंह रावत ने १५ सितंबर को मियांवाला स्थित सहकारिता मुख्यालय भवन में वरिष्ठ अधिकारियों और कोआपरेटिव बैंक के नौ चेयरमैन के साथ विभागीय कार्यों की समीक्षा बैठक की।

डा. रावत ने कहा कि ६ अक्टूबर को श्राद्ध पक्ष खत्म होने के बाद १० अक्टूबर से ऋण वितरण कार्यक्रम शुरू किया जाएगा। उन्होंने कहा कि बैंक शून्य प्रतिशत ब्याज पर किसानों, महिला समूहों को पूर्व की भांति ऋण वितरण करने के लिए ६८३ मेले आयोजित किये जाएंगे। तेरह जिलों में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी शून्य प्रतिशत ब्याज पर ऋण मेले का उद्घाटन करेंगे। और ६७० मेलों का उद्घाटन क्षेत्रीय विधायक, क्षेत्रीय सांसद, डिस्टिक कोआपरेटिव बैंक के चेयरमैन, ब्लाक प्रमुख व अन्य जनप्रतिनिधि करेंगे। न्याय पंचायत स्तर पर लगने वाले इन शून्य प्रतिशत ऋण मेलों में लोग ऋण लेकर स्वरोजगार कार्यक्रम चलाएंगे। यह ऋण वितरण कार्यक्रम दिसम्बर तक चलाया जायेगा। गौरतलब है कि सहकारिता विभाग ने फरवरी माह में शून्य प्रतिशत ऋण पर विभिन्न जगह मेले लगाए थे, जिसमें ५ लाख किसानों ने शून्य प्रतिशत ब्याज पर कोआपरेटिव बैंक व पैक्स समितियों से ऋण लिया था। जिस पैसे से वह अपना स्वरोजगार कर रहे हैं। किसानों और महिलाओं के लिए कोआपरेटिव बैंक व समितियों की यह लाभकारी योजना है।

इस मौके पर सहकारिता मंत्री धन सिंह रावत सहकारिता सचिव आर मीनाक्षी सुंदरम, निबंधक आनंद स्वरूप, नौ डीसीबी चेयरमैन ने समाचार पत्रिका 'सहकारिता दर्पण' जो हर तीसरे माह प्रकाशित किया जाएगा का लोकार्पण किया। सहकारिता दर्पण में उत्तराखंड सहकारिता विभाग की प्रमुख १५ योजनाओं का सचित्र जिक्र किया गया है। मंत्री डा. रावत ने कहा कि सहकारिता विभाग ने पिछले साढे ४ सालों में लोक हितकारी योजनाएं चलाई हैं जिसका लाभ लोगों को अब मिलने जा रहा है।

इस अवसर पर सहकारिता सचिव आर मीनाक्षी सुंदरम, निबंधक सहकारिता समितियां आनंद स्वरूप, डिस्टिक कोआपरेटिव बैंक के चेयरमैन टिहरी गढ़वाल सुभाष रमोला, डस्टिक कोआपरेटिव बैंक उत्तरकाशी के चेयरमैन विक्रम सिंह रावत, डिस्टिक कोआपरेटिव बैंक देहरादून के चेयरमैन अमित शाह डिस्टिक कोआपरेटिव बैंक हरिद्वार के चेयरमैन प्रदीप चौधरी, डिस्टिक कोआपरेटिव बैंक पौड़ी गढ़वाल कोटद्वार के चेयरमैन नरेंद्र सिंह, डीसीबी अल्मोडा चेयरमैन ललित लटवाल, डिस्टिक कोआपरेटिव बैंक पिथौरागढ़ के चेयरमैन मनोज सावंत, डिस्टिक कोआपरेटिव बैंक उधम सिंह नगर के चेयरमैन योगेंद्र सिंह रावत, डिस्टिक कोआपरेटिव बैंक चमोली के चेयरमैन गजेंद्र रावत, अपर निबंधक श्रीमती ईरा उप्रेती, अपर निबंधक आनंद शुक्ला उपनिबंधक नीरज बेलवाल, उप निबंधक एमपी त्रिपाठी, उप निबन्धक रामिन्द्री मंद्रवाल, उप निबन्धक मान सिंह सैनी, सहित अन्य अधिकारी मौजूद थे।

शून्य प्रतिशत ब्याज पर किसानों, महिला समूहों को पूर्व की भांति ऋण वितरण करने के लिए ६८३ मेले आयोजित किये जाएंगे। तेरह जिलों में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी शून्य प्रतिशत ब्याज पर ऋण मेले का उद्घाटन करेंगे।

ग्राम भारती पाक्षिक

सहकारिता विशेषांक

01 से 15 नवंबर 2021

विशेष साक्षात्कार

पंचायत प्रतिनिधि साक्षात्कार

सहकारिता पर विशेष

सम-सामयिक ग्रामीण और कृषि समाचार

अपनी प्रति सुरक्षित कराएं, विशेषांक में प्रकाशन हेतु विज्ञापन देकर सहयोग करें।

अंत्योदय!
समग्र विकास का मूल मंत्र

डा. जयपाल सिंह 'व्यस्त'

किसी भी राष्ट्र और उसके समाज का समग्र विकास तब तक नहीं हो सकता, जबतक कि उसके अंतिम पायदान पर बैठे व्यक्ति का उत्थान न हो जाए। अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति के उत्थान की परिकल्पना और उसे साकार करने का मूल मंत्र 'एकात्म मानववाद' देने वाले पं. दीनदयाल उपाध्याय का २५ सितंबर को जन्मदिवस है। इस अवसर पर 'अंत्योदय' के सिद्धान्त उसके क्रियान्वयन की पद्यति और 'अंत्योदय से ग्रामोदय' और 'ग्रामोदय से राष्ट्रोदय' के लक्ष्य को कैसे प्राप्त किया जा सकता है? इन सब विषयों पर ग्राम भारती के संपादक **सर्वेश कुमार सिंह** ने बरेली-मुरादाबाद खंड स्नातक क्षेत्र से विधान परिषद् सदस्य और परिषद् के अधिष्ठाता मंडल के सदस्य वरिष्ठ राजनीतिज्ञ, शिक्षाविद, समाजसेवी, कला मर्मज्ञ, संगीतज्ञ और पत्रकार **डा. जयपाल सिंह 'व्यस्त'** से बातचीत की। प्रस्तुत हैं बातचीत के प्रमुख अंश :

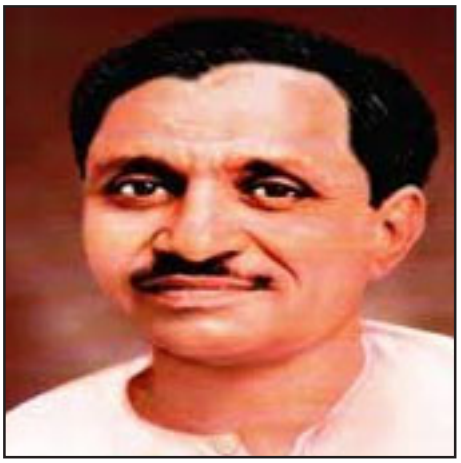

प्रश्नः पं. दीनदयाल उपाध्याय का 'एकात्म मानववाद' और 'अन्त्योदय' सिद्धांत क्या है ?

उत्तरः अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में दुनिया दो वादों के बीच में फंसी हुई थी, ये वाद थे - पूंजीवाद और साम्यवाद। पूरी दुनिया इन दो वादों के बीच में झूल रही थी। एक ओर पूंजीवाद और दूसरी ओर इसके विरोध में साम्यवाद था। पूंजीवाद की विकृतियों ने ही साम्यवाद को जन्म दिया। दुनिया के मजदूर एक हों, सर्वहारा के नारे लगे। पूरी दुनिया दो समाजों में विभाजित हो गई थी। लेकिन, पूंजीवाद ने वैश्विक समाज का उतना नुकसान नहीं किया था जितना कि साम्यवाद ने किया। इसका कारण था, साम्यवाद की सोच, उसके सिद्धान्त - खूनी संघर्ष और उसके प्रतीक 'लाल सलाम' थे। इस वाद ने सृजन के स्थान पर दुनिया में विनाश की विचारधारा को बल दिया और विध्वंस को बढ़ावा दिया। दुनिया में साम्यवाद का प्रभाव चूंकि पूंजीपतियों के कारण प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ। इसलिए साम्यवाद की जड़ें गहराती चली गईं। परिणाम स्वरूप दुनिया के कई देशों में साम्यवादी विचारों की सत्ता स्थापित हो गई। दो देश साम्यवादी सत्ता के प्रभुत्व के केन्द्र बनकर उभरे। यहां साम्यवादी विचार की सरकार स्थापित हो गई। ये केन्द्र बने 'चीन और रूस'। चीन 'मार्क्सवादियो' का तो रूस 'लेनिनवादियों' का केन्द्र बन गया। साम्यवादियों का प्रवेश भारत में भी स्वतंत्रता के पूर्व हो चुका था। उत्तर प्रदेश के उद्योगों में लाल सलाम का सिद्धान्त लागू होने लगा था।

आजादी के बाद बनी सरकार में पहले प्रधानमंत्री भी साम्यवादी विचार के प्रभाव में थे। इसी कारण अप्रत्यक्ष रूप से साम्यवादी देश की 'राष्ट्रीय व सामरिक नीति' के निर्धारण में भाग लेने लगे और वे सरकार का भी हिस्सा बन गए। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय उसी विचार और रणनीति की देन है। यह वर्तमान में राष्ट्रविरोधी विचार के लोगों के निर्माण का कारखाना बन गया है। आजादी के बाद देश में जो दल उभरे उनमें 'समाजवादी दल' प्रमुख था। यह दल ड़ा. राममनोहर लोहिया और आचार्य नरेन्द्र देव के विचारों से प्रभावित था। इस तरह साम्यवादी विचार का दल 'भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी' तीसरे पायदान का राजनीतिक दल था।

इसी दौर में पं.दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय विचारों के राजनीतिक दल 'जनसंघ' की स्थापना के साथ ही इसके थिंक टैंक के रूप में उभरे। उन्होंने विचार दिया, 'देश का भला न तो पूंजीवाद से होगा और न ही साम्यवाद से' होगा। पूंजीवाद की व्यवस्था में शेष समाज की उपेक्षा होती है, और साम्यवाद 'पूंजी निवेश' को ही समाप्त करना चाहता है। इसलिए जनसंघ के संस्थापक सदस्य पं. दीनदयाल उपाध्याय ने नया दर्शन दिया 'एकात्म मानववाद'। उनका विचार था कि हम न तो विशुद्ध पूंजीवादी हैं और न ही हम विशुद्ध साम्यवादी हैं। हमारी पुरातन संस्कृति आधात्म पर आधारित है, जिसका साम्यवाद विरोध करता है। धर्म को अफीम बताता है। जबकि धर्म से ही सारे विषय निकलते हैं, हमारी समस्त व्यवस्थाओं का आधार धर्म ही है। इसलिए भारतीयता से परिपूर्ण आर्थिक व्यवस्था होनी चाहिए। इसी के आधार पर हमारे यहां धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ और संयास की व्यवस्था रही है। इस व्यवस्था को एकात्म मानववाद का आधार बनाकर एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जोकि

अंत्योदय से पंडित जी का तात्पर्य विकास के अंतिम पायदान पर खड़ा व्यक्ति है। समाज का उदय कैसे संभव है। यह समाज शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार इत्यादि जो विकास के मुख्य सोपान हैं, उनसे सबसे वंचित है। उन्हें विकास की मुख्यधारा में कैसे शामिल किया जाए। इसके लिए उन्होंने 'अन्त्योदय' का सिद्धान्त दिया। उन्होंने अपने राजनीतिक दल के माध्यम से राष्ट्रीय अर्थनीति क्या हो, उसके लिए अंत्योदय को प्रमुखता प्रदान की। उन्होंने कहा विकास की कोई भी योजना बने, केन्द्र बनाए या राज्य, लेकिन अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति या परिवार पर केन्द्रित होनी चाहिए। अंत्योदय के माध्यम से वे कृषि उत्पादकों के प्रति भी अत्यंत चिंतत रहते थे।

'अंत्योदय' के रूप में समाज और राष्ट्र के सामने आया।

प्रश्नः पं.दीनदयाल उपाध्याय जी का जीवन कैसा था, किन परिस्थितियों में उन्होंने राष्ट्र सेवा का व्रत लिया ?

उत्तरः पं. दीनदयाल जी का लालन पालन विषम परिस्थितियों में हुआ, उनकी पारिवारिक स्थिति, आर्थिक रूप से सुदृढ़ नहीं थी। माता-पिता ने बहुत जल्दी उनका साथ छोड़ दिया था। इन स्थितियों में वे नगला चंद्रभान से निकलकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े और प्रचारक बन गए। जनसंघ की स्थापना के समय वे संस्थापक सदस्यों में प्रमुख थे।

प्रश्नः पं. दीनदयाल उपाध्याय जी का ग्रामीण जन-जीवन और उसके उत्थान के लिए चिंतन क्या है ?

उत्तरः पंडित जी की कल्पना थी कि अपने देश में जहां ८० प्रतिशत आबादी गांवों में निवास करती है। वहां विकास की किरणें सिर्फ शहरों तक सिमट कर रह जाती हैं। ऐसे में गांव तक विकास का पहुंचना असंभव नजर आता है। वे गरीब, वंचित, असहाय और निर्बल समाज को देखकर पीड़ा अनुभव करते थे। उनका विचार था कि जो दरिद्र है, वही हमारा ईश्वर है, वही हमारा नारायण है। अतः उन्होंने 'दरिद्र नरायण' शब्द से इस वर्ग का मनोबल बढाया। उन्होंने इस शब्द का प्रयोग किया।

प्रश्नः अंत्योदय का आशय और इसका सिद्धान्त क्या है?

उत्तरः अंत्योदय से पंडित जी का तात्पर्य विकास के अंतिम पायदान पर खड़ा व्यक्ति है। समाज का उदय कैसे संभव है। यह समाज शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार इत्यादि जो विकास के मुख्य सोपान हैं, उनसे सबसे वंचित है। उन्हें विकास की मुख्यधारा में कैसे शामिल किया जाए। इसके लिए उन्होंने 'अन्त्योदय' का सिद्धान्त दिया।

उन्होंने अपने राजनीतिक दल के माध्यम से राष्ट्रीय अर्थनीति क्या हो, उसके लिए अंत्योदय को प्रमुखता प्रदान की। उन्होंने कहा विकास की कोई भी योजना बने, केन्द्र बनाए या राज्य, लेकिन अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति या परिवार पर केन्द्रित होनी चाहिए। अंत्योदय के माध्यम

पंडित जी संत विनोबा भावे के विचारों के भी पक्षधर थे। विनोबा जी ने सर्वोदय का जो नारा दिया, अंत्योदय उसी का एक वृहद रूप है। समाज में आर्थिक असमानता दूर करने के लिए जो भी प्रयास हो सकते हैं, नीतियों के माध्यम से कर लिये जाने चाहिए।

से वे कृषि उत्पादकों के प्रति भी अत्यंत चिंतत रहते थे। किसानों की लागत, मेहनत उस पर प्राकृतिक आपदाओं की मार, इन सबसे उनकी कमर टूटती देखकर पंडित जी विचलित होते थे। इसी के साथ.साथ जो भूमिहीन हैं, उनकी चिंता कैसे हो। जिनके पास खेती के अलावा अन्य आय का कोई स्रोत नहीं है, उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार कैसे हो, उनका जीवन स्तर कैसे ऊपर उठे। इसकी व्यवस्था कैसे हो। इसके लिए उन्होंने अंत्योदय के माध्यम से अनेक महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किये। कुटीर उद्योग समेत अन्य ग्रामीण उद्योग हैं उन्हें कैसे कम ब्याज पर कर्ज देकर आगे बढाया जाए इसकी भी वे परिकल्पना करते थे।

प्रश्नः ग्रामोदय के लिए पं. दीनदयाल उपाध्याय का क्या चिंतन है ?

उत्तरः पंडित जी संत विनोबा भावे के विचारों के भी पक्षधर थे। विनोबा जी ने सर्वोदय का जो नारा दिया, अंत्योदय उसी का एक वृहद रूप है। समाज में आर्थिक असमानता दूर करने के लिए जो भी प्रयास हो सकते हैं, नीतियों के माध्यम से कर लिये जाने चाहिए। उनका ठीक से क्रियान्वयन होना चाहिए। महात्मा गांधी के 'ग्रामोदय' शब्द को भी उन्होंने अंत्योदय में समाहित किया। गांधी जी का देश के विकास का जो सपना था, उसे अंत्योदय के माध्यम से पूरा करने का संकल्प पंडित जी के दर्शन में स्पष्ट दिखायी देता है। वे कहते थे, कि देश की अस्सी प्रतिशत आबादी जोकि गांव में बसती है, उसकी उपेक्षा के आधार पर देश कभी भी अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो सकता। पंडित जी ने विचार को व्यवहार में बदला। उनके दल जनसंघ का जैसे - जैसे केन्द्र और राज्यों

में विस्तार हुआ और कई राज्यों में सरकार में दल शामिल हुआ, उसी के सापेक्ष अंत्योदय की परिकल्पना भी साकार होती दिखायी देने लगी।

प्रश्नः कैसे साकार हो रहा है अंत्योदय का सपना ?

उत्तरः राजनीति से समाज सेवा और ग्रामीण उत्थान के अभियान में जुड़े नानाजी देशमुख अंत्योदय के सपने को साकार करने वाले अनुकरणीय व्यक्तित्व रहे, जिन्होंने समग्र विकास के लिए गोंडा जनपद को गोद लिया। तदुपरांत चित्रकूट धाम में अद्भूत ग्रामोदय विश्वविद्यालय स्थापित किया। यह दीनदयाल जी के एकात्म मानववाद और अंत्योदय के सपने को साकार कर रहा है। केन्द्र में मा. अटल बिहारी वाजपेयी जी की तीन बार सरकार बनी। उनकी सरकार में समस्त विकास योजनाएं अंत्योदय पर ही आधारित रही हैं।

वर्ष २०१४ में जब श्री नरेन्द्र भाई मोदी प्रधानमंत्री बने तो उनके अंदर दीनदयाल जी का दर्शन पूरी तरह से रचा-बसा हुआ था। 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' 'आत्म निर्भर भारत' कैसे बने ? इस लक्ष्य को पूर्ण करने में पं. दीनदयाल जी की प्रेरणा उनके लिए वरदान साबित हो रही है। श्री नरेन्द्र मोदी जी के बीस साल के गुजरात के मुख्यमंत्री और अब प्रधानमंत्री के रूप में जो कीर्तिमान स्थापित हुए हैं, वे सब अंत्योदय की अवधारणा के क्रियान्वित स्वरूप हैं।

देश में विकास के जो मापदंड उस समय स्थापित किये गए। वे आज सभी सरकारों के लिए अनुकरणीय हैं। वर्ष २०१४ में जब श्री नरेन्द्र भाई मोदी प्रधानमंत्री बने तो उनके अंदर दीनदयाल जी का दर्शन पूरी तरह से रचा-बसा हुआ था। 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' 'आत्म निर्भर भारत' कैसे बने ? इस लक्ष्य को पूर्ण करने में पं. दीनदयाल जी की प्रेरणा उनके लिए वरदान साबित हो रही है। श्री नरेन्द्र मोदी जी के बीस साल के गुजरात के मुख्यमंत्री और अब प्रधानमंत्री के रूप में जो कीर्तिमान स्थापित हुए हैं, वे सब अंत्योदय की अवधारणा के क्रियान्वित स्वरूप हैं। उसी के आधार पर मोदी जी ने एक और नया शब्द दिया, जिसको 'राष्ट्रोदय' के नाम से पुकारा गया। पूरे राष्ट्र का विकास रूपी उदय। किसी प्रकार का भेदभाव नहीं, किसी प्रकार का पक्षपात नहीं। सबका साथ-सबका विकास और सबका विश्वास इस उद्घोषणा के साथ देश के विकास के लिए समग्र भाव से प्रधानमंत्री मोदी जी लगे हुए हैं। मोदी जी ने राष्ट्रोदय के अंतर्गत जहां-जहां अंत्योदय को प्रधानता दी है, वहीं विनोबा जी के सर्वोदय, गांधी जी के ग्रामोदय को भी प्रमुखता के साथ सम्मिलित किया है।

शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और इसके साथ ही सामरिक दृष्टि से विश्व में देश का मान-सम्मान व स्वाभिमान बढ़ाने के पीछे अगर कोई प्रेरणा है तो प्रमुखता से 'अंत्योदय' की प्रेरणा है। खेत से खलिहान तक, बीज से बाजार तक। सबको नियोजित ढंग से राष्ट्रोदय के आह्वान के साथ लागू किया है। पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी के 'जय जवान-जय किसान' के नारे को भी मुखरता के साथ अपनी नीतियों में क्रियान्विवत किया है। यहा यह भी उल्लेखनीय है कि जहां विनोबा जी, गांधी जी, दीनदयाल जी एक सामान्य मनुष्य नहीं, बल्कि एक संत के रूप में इस धरा पर अवतरित हुए और सम्मानित हुए। उसी क्रम में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी राजनीतिक स्तर पर आसीन होते हुए भी विश्व उन्हें संत के रूप में स्थान प्रदान करता है। दीनदयाल जी के अंत्योदय के चिंतन और दर्शन के आधार पर ही उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में सरकार निम्न से निम्न और गरीब से गरीब के उत्थान के लिए योजनाएं बना कर उनको क्रियान्वित कर रही है। इसी का सुफल है कि आज उत्तर प्रदेश में गांव,गरीब और किसान को केन्द्रित करके विकास हो रहा है। यह विकास दिखाई भी दे रहा है।

परिचय
डा. जयपाल सिंह व्यस्त
(अधिष्ठाता विधान परिषद् उ. प्र. एवं सदस्य, बरेली-मुरादाबाद खण्ड स्नातक क्षेत्र)

आपका जन्म उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर जिला अन्तर्गत ग्राम सोही शिवागढ़ में एक जुलाई १९५४ को हुआ। प्राथमिक शिक्षा गांव सोही और पहासू में हुई। गांव के जूनियर हाईस्कूल से शिक्षण कार्य आरंभ किया। तदुपरानंत आप समाज सेवा के क्षेत्र में सक्रिय हो गए तथा १९७२ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े। आपने १९७४ में प्रथम संघ शिक्षा वर्ग ,१९७५ में दिवतीय वर्ष तथा १९७८ में तृतीय वर्ष संघ शिक्षा वर्ग किया। संघ में जिला शारीरिक प्रमुख बिजनौर तथा सहजिला कार्यवाह मुरादाबाद के दायित्व का निर्वहन किया। आपने वर्ष १९७४ में विद्या भारती से जुडकर बिजनौर के नूरपुर में सरस्वती शिशु मन्दिर में प्रधानाचार्य का दायित्व ग्रहण किया, इसी क्रम में धामपुर और कैसला में प्रधानाचार्य रहे। तदुपरान्त आपने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश किया। आप मुरादाबाद के प्रतिष्ठित हिन्दू महाविद्यालय में शिक्षा विभाग में प्रवक्ता रहे। आपने २५ वर्ष हिन्दू कालेज में शिक्षण कार्य किया तथा एसोसिएट प्रोफेसर से सेवानिवृत हुए। वर्ष २०१४ में राजनीति को सेवा का माध्यम बनाया और बरेली-मुरादाबाद खण्ड स्नातक क्षेत्र से विधान परिषद् के सदस्य निर्वाचित हुए। वर्तमान में आप २०१७ में विजयी होकर दूसरी बार विधान परिषद् के सदस्य हैं। आप विधान परिषद् के अधिष्ठाता मंडल के सदस्य हैं। आपका सामाजिक कार्यों के साथ-साथ संगीत के क्षेत्र में भी विशेष योगदान है। आप संस्कार भारती के संस्थापक सदस्य हैं। संस्कार भारती में आप प्रांत महामंत्री और क्षेत्र महामंत्री रहे। आपने अमर उजाला, विश्व मानव, नवसत्यम और उत्तर प्रदेश समाचार सेवा के साथ जुड़कर पत्रकारिता की। ग्रामीण पत्रकारिता में आपका विशेष योगदान है। मुरादाबाद के सौ गांवों पर आलेख की श्रंखला प्रकाशित की। आपने शिक्षण कार्य के साथ-साथ शिक्षा ग्रहण करने को भी प्राथमिकता दी। डाक्टेरट के साथ-साथ बी.एड, एम.एड, एलएलबी, सगीत प्रभाकर और साहित्यरत्न किया। आपके १६० शोध पत्र प्रकाशित हुए हैं। शिक्षा से जुड़ी सेमिनार के लिए १० देशों की यात्रा की है। मंच संचालन की विधा में आपका मुरादाबाद मंडल में सर्वोच्च स्थान है।

जमीनी लोकतंत्र की आवश्यकता संसद टीवी:नरेन्द्र मोदी

उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और लोकसभा अध्यक्ष ने संसद टीवी का शुभारम्भ किया

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति और राज्यसभा के सभापति श्री वेंकैया नायडू, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिड़ला ने अंतरराष्ट्रीय लोकतंत्र दिवस के अवसर पर संयुक्त रूप से संसद टीवी का शुभारम्भ किया। इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए, प्रधानमंत्री ने तेजी से बदलते दौर के साथ संसद से जुड़े चैनल में बदलाव की सराहना की। उन्होंने कहा, यह तब और भी अहम हो जाता है जब २१वीं सदी संवाद और संचार के माध्यम से क्रांति ला रही है। प्रधानमंत्री ने संसद टीवी के शुभारम्भ को भारतीय लोकतंत्र के इतिहास की कहानी में एक नया अध्याय बताया, क्योंकि संसद टीवी के रूप में देश को संचार और संवाद का एक माध्यम मिलने जा रहा है जो राष्ट्र के लोकतंत्र और लोगों के प्रतिनिधि की एक नई आवाज बन जाएगा। प्रधानमंत्री ने दूरदर्शन को अपनी स्थापना के ६२ वर्ष पूर्ण करने के लिए शुभकामनाएं दीं। उन्होंने इंजीनियर दिवस के अवसर पर सभी इंजीनियरों को भी शुभकामनाएं दीं।

अंतरराष्ट्रीय लोकतंत्र दिवस को भी ध्यान में रखते हुए,

कंटेंट के महत्व पर बात करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा, जब 'कंटेंट इज किंग' कहा जाता है तो उनके अनुभव में 'कंटेंट इज कनेक्ट' है। उन्होंने विस्तार से बताते हुए कहा, जब किसी के पास बेहतर कंटेंट होता है तो लोग स्वतः ही उसके साथ जुड़ते जाते हैं। यह बात जितनी मीडिया पर लागू होती है, उतनी ही हमारी संसदीय व्यवस्था पर भी लागू होती है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि जब लोकतंत्र की बात आती है तो भारत की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है, क्योंकि भारत लोकतंत्र की जननी है। भारत के लिए लोकतंत्र सिर्फ एक व्यवस्था नहीं है, यह एक विचार है। भारत में लोकतंत्र सिर्फ एक संवैधानिक स्ट्रक्चर नहीं, बल्कि एक स्पिरिट है। भारत में लोकतंत्र, सिर्फ संविधानों की धाराओं का संग्रह ही नहीं है, ये तो हमारी जीवन धारा है।

प्रधानमंत्री ने स्वतंत्रता के ७५ वर्ष के संदर्भ में मीडिया की भूमिका को रेखांकित किया, जब अतीत का गौरव और भविष्य के प्रति भरोसा दोनों हमारे सामने हैं। उन्होंने कहा कि जब मीडिया स्वच्छ भारत अभियान जैसे मुद्दों को उठाता है तो यह लोगों तक तेज गति से पहुंचता है। उन्होंने सुझाव दिया कि मीडिया स्वतंत्रता संग्राम के ७५ एपिसोड की योजना बनाकर या इस अवसर पर विशेष सप्लीमेंट लाकर आजादी का अमृत महोत्सव के दौरान लोगों के प्रयासों के प्रसार में एक भूमिका निभा सकता है।

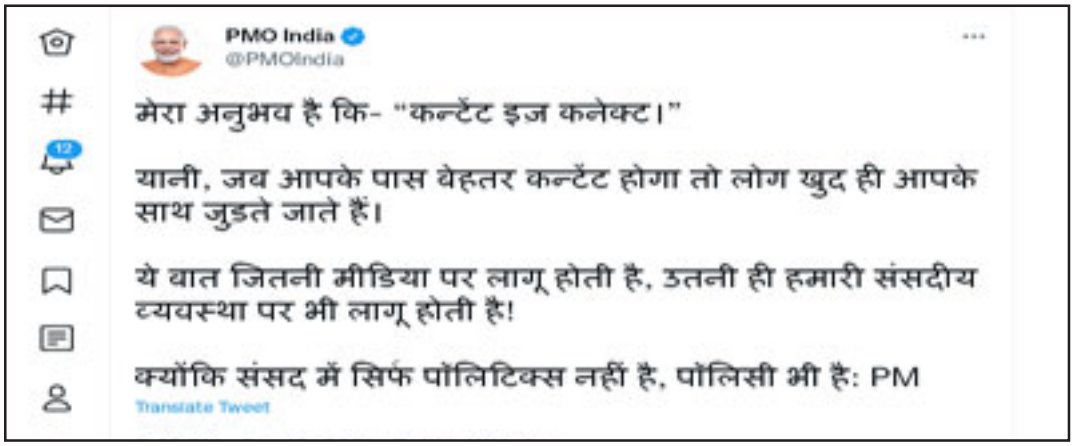

अंतरराष्ट्रीय लोकतंत्र दिवस को भी ध्यान में रखते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा कि जब लोकतंत्र की बात आती है तो भारत की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है, क्योंकि भारत लोकतंत्र की जननी है। भारत के लिए लोकतंत्र सिर्फ एक व्यवस्था नहीं है, यह एक विचार है। भारत में लोकतंत्र सिर्फ एक संवैधानिक स्ट्रक्चर नहीं, बल्कि एक स्पिरिट है। भारत में लोकतंत्र, सिर्फ संविधानों की धाराओं का संग्रह ही नहीं है, ये तो हमारी जीवन धारा है।

कंटेंट के महत्व पर बात करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा, जब 'कंटेंट इज किंग' कहा जाता है तो उनके अनुभव में 'कंटेंट इज कनेक्ट' है। उन्होंने विस्तार से बताते हुए कहा, जब किसी के पास बेहतर कंटेंट होता है तो लोग स्वतः ही उसके साथ जुड़ते जाते हैं। यह बात जितनी मीडिया पर लागू होती है, उतनी ही हमारी संसदीय व्यवस्था पर भी लागू होती है, क्योंकि संसद में सिर्फ राजनीति नहीं होती है, नीति भी बनती है। उन्होंने जोर देकर कहा कि आम जनता को संसद की कार्यवाही के साथ जुड़ाव महसूस करना चाहिए। उन्होंने कहा कि नया चैनल इस दिशा में काम करेगा।

प्रधानमंत्री ने कहा, जब संसद में सत्र होता है, विभिन्न विषयों पर चर्चा होती है तो उसमें युवाओं के सीखने के लिए काफी कुछ होता है। हमारे माननीय सदस्यों को भी जब पता होता है कि देश उन्हें देख रहा है तो उन्हें भी संसद के भीतर बेहतर आचरण की, बेहतर बहस की प्रेरणा मिलती है। उन्होंने नागरिकों के कर्तव्यों पर ध्यान केंद्रित करने की जरूरत पर भी जोर दिया और कहा कि इस संबंध में जागरूकता के लिए मीडिया एक प्रभावी माध्यम है। प्रधानमंत्री ने कहा कि इन कार्यक्रमों से, हमारे युवाओं को हमारे लोकतांत्रिक संस्थानों, उनके कामकाज के साथ ही नागरिक कर्तव्यों के बारे में सीखने के लिए काफी कुछ मिलेगा। इसी प्रकार, कार्यकारी समितियों, विधायी कार्य के महत्व और विधायिकाओं के कार्य के बारे में पर्याप्त जानकारी होगी, जिससे गहनता के साथ भारत के लोकतंत्र को समझने में सहायता मिलेगी। उन्होंने उम्मीद जताई कि संसद टीवी में जमीनी लोकतंत्र के रूप में पंचायतों के कामकाज पर कार्यक्रम बनाए जाएंगे। ये कार्यक्रम भारत के लोकतंत्र को एक नई ऊर्जा, एक नई चेतना देंगे।

एकात्म दर्शन का सूत्र

(संकलितः पं. दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन खंडः४-एकात्म अर्थनीति)

भारतीय संस्कृति एकात्मवादी है। अतः शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा से युक्त धर्म,अर्थ,काम एवं मोक्ष के चतुर्विध पुरुषार्थों की साधना करने वाला, और एक ही साथ परिवार,जाति, राष्ट्र एवं मानव समाज आदि विविध एकात्म समष्टियों का प्रतिनिधित्व करने की क्षमता रखने वाला मानव इस दर्शन का केन्द्र बिन्दु है।

एकात्म अर्थनीति का विस्तृत विवेचन करने से पूर्व उस दर्शन का संदर्भ सूत्र समझ लेना उपयुक्त होगा। एकात्म मानव दर्शन एक ऐसा जीवन दर्शन है, जो मनुष्य का विचार केवल 'आर्थिक मानव' के एकांगी दृष्टिकोण से न करते हुए जीवन के समग्र पहलुओं का तथा ऐसे मानव के अन्य मानवों एवं मानवेत्तर सृष्टि के साथ परस्परपूरक एकात्म संबंधों को भी ध्यान में लेकर समृद्धि, सुखी एवं कृतार्थ जीवन की दिशा दर्शाता है।

एकात्म मानव दर्शन भारतीय संस्कृति का जीवन दर्शन है। भारतीय संस्कृति एकात्मवादी है। अतः शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा से युक्त धर्म, अर्थ,काम एवं मोक्ष के चतुर्विध पुरुषार्थों की साधना करने वाला, और एक ही साथ परिवार,जाति, राष्ट्र एवं मानव समाज आदि विविध एकात्म समष्टियों का प्रतिनिधित्व करने की क्षमता रखने वाला मानव इस दर्शन का केन्द्र बिन्दु है।

पश्चिमी देशों में मानवतावाद के नाम पर अनेक विचारधाराएं प्रचलित हैं। किन्तु, उनमें से अधिसंख्य विचारधाराएं केवल भौतिकवादी हैं। अतः वे मानव कल्याण की दृष्टि से सफल नहीं रही हैं। जीवन का सर्वांगीण विचार भारतीय संस्कृति की अपनी विशेषता है। इसीलिए अर्थ और काम दोनों पुरुषार्थों को उसने

भौतिक समृद्धि के साथ ही मानसिक स्वास्थ्य एवं संतोष प्राप्त करा देने वाली संजीवनी की उसे एषणा (तलाश) है। दीनदयाल जी द्वारा प्रस्तुत एकात्म मानव दर्शन और उसके अन्तर्गत आने वाली एकात्म अर्थनीति में से इस संजीवनी को अनुभव किया जा सकता है।

मानवता का विकास करने वाले धर्म और मोक्ष पुरुषार्थों के साथ एक संयुक्त चौखट में बिठाया है।

अर्थनीति का विचार करते समय आर्थिक बातों के साथ ही कुछ अनार्थिक बातों का भी विचार करना पड़ता है। किन्तु लगता है कि अधिसंख्य पश्चिमी अर्थशास्त्रज्ञों ने इन आर्थिकेतर बातों का कोई विचार नहीं किया है। हां, कुछ बिरले पश्चिमी विचारकों को यह कमी अब अवश्य खलने लगी है। जे.एस. सिल कहते हैं- 'यह नहीं कहा जा सकता कि सभी आर्थिक प्रश्नों का केवल अर्थशास्त्र के आधार पर ही समाधान ढूंढा जा सकता है। अनेक आर्थिक प्रश्न ऐसे होते हैं, जिनके महत्वपूर्ण राजनीतिक एवं नैतिक पक्ष भी होते हैं, जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती'। प्रो. जेकब विनर लिखते हैं-केवल अधिक पूंजी, अधिक भूमि, कोयले की अधिक खानें आदि वालों के आधार पर आर्थिक प्रगति नहीं की जा सकती। अच्छी शिक्षा, संस्कार, राजनीतिक एवं सामाजिक संगठन एवं श्रम की प्रतिष्ठा को संजोये रखना भी उसके लिए आवश्यक होता है। प्रो. गुन्नार मिर्डल ने भी कुछ भिन्न शब्दों में यही विचार प्रकट किया है। वे कहते हैं-अर्थशास्त्रिज्ञों द्वारा निरुपित उत्पादन के घटकों के गुणधर्मों के साथ आर्थिकेतर घटकों का पर्याप्त संबंध रहता है, इसीलिए आर्थिक घटकों के साथ आर्थिकेतर घटकों का भी विचार करने वाले अर्थशास्त्र को हमें विकसित करना होगा।

किन्तु कम से कम आज तक इन विचारकों द्वारा प्रस्तुत ये विचार मात्र अरण्यरुदन ही रहे हैं। आज पश्चिमी अर्थशास्त्र विज्ञान का अधिकाधिक विचार कर मानव की केवल भौतिक समृद्धि बढ़ाने की दिशा में ही सोचता है। अर्थशास्त्र हो, औषधि विज्ञान हो, प्रकृति विज्ञान हो अथवा मनोविज्ञान सब का बल इसी बात पर है। आल्विन टाल्फर अपनी "फ्यूचर शाक" पुस्तक में लिखते हैं- 'Modern Economics analysis is defective as it is highly econocentric with its total emphasis on money, utility and value'

जिस अर्थशास्त्र को मानव के समग्र जीवन और उसके आर्थिक घटकों की भांति आर्थिकेतर घटकों के संबंधों का भान न हो, वह मानव को शाश्वत कल्याण की योग्य दिशा कदापि नहीं दे सकता।

तात्पर्य, आज विश्व विकास का एक चरण पूरा कर खड़ा है। भौतिक समृद्धि के साथ ही मानसिक स्वास्थ्य एवं संतोष प्राप्त करा देने वाली संजीवनी की उसे एषणा (तलाश) है। दीनदयाल जी द्वारा प्रस्तुत एकात्म मानव दर्शन और उसके अन्तर्गत आने वाली एकात्म अर्थनीति में से इस संजीवनी को अनुभव किया जा सकता है।

अर्थनीति का विचार करते समय आर्थिक बातों के साथ ही कुछ अनार्थिक बातों का भी विचार करना पड़ता है। किन्तु लगता है कि अधिसंख्य पश्चिमी अर्थशास्त्रज्ञों ने इन आर्थिकेतर बातों का कोई विचार नहीं किया है। हां, कुछ बिरले पश्चिमी विचारकों को यह कमी अब अवश्य खलने लगी है।

सबका साथ सबका विकास की नीति लक्ष्य

प्रियांशु रघुवंशी

जनपद शाहजहांपुर का विकास खंड मिर्जापुर में ५५ ग्राम पंचायतों के ७३ बीडीसी सदस्यों से बना है इन क्षेत्र पंचायत सदस्यों द्वारा निर्विरोध निर्वाचित ब्लाक प्रमुख प्रियांशु रघुवंशी पूरे शाहजहांपुर जनपद में सबसे कम उम्र के प्रमुख है २ अक्टूबर १९९६ को गांधी जयंती पर जन्मे श्री रघुवंशी की उम्र मात्र २५ वर्ष है युवा होने के नाते काम करने का एक अलग उत्साह उनमें नजर आता है। गांव की समस्याओं भरी जिंदगी से वह अच्छी तरह वाकिफ हैं और गांव के आम आदमी व गरीबों के प्रति उनमें विशेष हमदर्दी है समाज के प्रति अपने कर्तव्य से भी वह भली-भांति परिचित हैं उनसे हमारे शाहजहांपुर के ब्यूरो प्रमुख **संजीव कुमार गुप्त** ने बातचीत की है जो प्रस्तुत है

श्री रघुवंशी ने बताया गांव के विकास में विकासखंड की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जिसमें गावों को स्वच्छ साफ सुथरा बनाने में सार्वजनिक शौचालयों में सफाई की व्यवस्था पथ प्रकाश सड़कें नाली व खडंजे के अलावा पेयजल की उपलब्धता तथा जल निकासी की व्यवस्था, तालाबों का संरक्षण, पौधारोपण, पौधों की देखभाल शामिल हैं।

खेती के लिए किसानों को जागरूक करने के साथ साथ सरकार द्वारा समय-समय पर उपलब्ध कराए गए अनेक संसाधन किसानों को उपलब्ध कराना भी प्राधमिकता है। एक सवाल के जवाब में युवा ब्लाक प्रमुख श्री रघुवंशी ने बताया की केंद्र सरकार व प्रदेश की योगी सरकार ने गांव के विकास व किसानों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने की दिशा में अनेक कदम बड़ी गंभीरता के साथ उठाए। जिससे उन्हें और अधिक काम करने की प्रेरणा मिली। उन्होंने बताया कि अभी तक के ब्लाक प्रमुख लोगों के मुंह देख कर और सिफारिश के आधार पर सरकारी योजनाओं का लाभ लोगों तक पहुंचाते थे। परंतु हमारा लक्ष्य सबका साथ सबका विकास है,जिनको अभी तक लाभ नहीं मिला है। उन तक

सरकारी योजनाओं का फायदा पहुंचाना हमारा कर्तव्य है। सरकार की मंशा के अनुरूप गांव को साफ सुथरा सुंदर व सभी जीवन उपयोगी सुविधाओं से युक्त आदर्श गांव बनाना है। सारी योजनाओं को पारदर्शिता के साथ जन-जन तक पहुंचाने का उपक्रम ही हमारा उद्देश्य है, हमारी सभी ५५ ग्राम पंचायत अच्छी तरह विकसित हों और सभी जनपदों में हम सभी मापदंडों में खरे उतरें इसी लक्ष्य को लेकर हम आगे बढ़ रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी शहरों में मिल रही सभी सुविधाएं गांव तक पहुंचाना चाहती है। इसका प्रथम माध्यम विकासखंड है ग्रामों की एक तरह से यह मूल इकाई है। भाजपा शासन में विद्युत सप्लाई की स्थिति में अभूतपूर्व सुधार हुआ है। पहले मुश्किल से दो ४ घंटे विद्युत सप्लाई मिलती थी परंतु अब १६ से २० घंटे बड़े आराम से विद्युत सप्लाई मिल रही है सिंचाई व्यवस्था भी इस कारण सुचारू रूप से हो पा रही है। स्वच्छता के प्रति भी लोगों में जागरूकता आ रही है। गांवों में उद्योग धंधों की स्थिति में काफी सुधार होने से गांव का शहरों की ओर पलायन भी रुक गया है। श्री रघुवंशी ने बताया की हम पर्यावरण को पूरी तरह शुद्ध बनाने की मुहिम चला रहे हैं।

साक्षात्कार/पंचायत प्रतिनिधि

अनुसूईया देवी,प्रधान डाढ़ाडीह गोरखपुर

पंडित दीनदयाल के सपनों को साकार कर रहीं अनुसुईया

दुर्गेश चन्द्र ओझा

गांव के विकास की जिम्मेदारियों के साथ ही उच्च शिक्षा प्राप्त (परास्नातक) अनुसूईया देवी संगठन के दायित्व का भी सफलतापूर्वक निर्वहन कर रही हैं। ग्राम पंचायत को कोरोना से मुक्ति दिलाने के बाद ग्रामीणों की एक और समस्या ग्राम में पंचायत भवन के निर्माण की ओर अनसूईया देवी ने ध्यान दिया। सक्षम अधिकारियों से सकारात्मक वार्ता कर उन्होंने गांव में पंचायत भवन का निर्माण भी कराया।

गोरखपुर के जंगल कौड़िया विकासखंड स्थित ग्राम डाढ़ाडीह की प्रधान अनुसूईया देवी पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानवतावाद के सिद्धांत को आत्मसात करते हुए ग्राम के चौमुखी विकास के लिए समर्पित भाव से कार्य कर रही हैं। विश्वव्यापी करोना माहामारी की चरम परिस्थितियों के दौरान ग्रामवासियों का विश्वास जीतकर प्रधान बनने वाली अनुसूईया देवी ने सबसे पहले गांव को कोरोनावायरस से मुक्त करने का संकल्प लिया, इच्छा दृढ़ थी सो ग्रामीणों का भरपूर सहयोग मिला। कोविड-१९ प्रोटोकाल के पालन की बात हो या कोरोना संक्रमित व्यक्ति के इलाज की समुचित व्यवस्था। सामूहिक सहयोग से प्रधान अनुसूईया देवी ने महामारी के खिलाफ जमकर लड़ाई लड़ी। परिणाम यह हुआ कि उनका गांव शीघ्र ही शत प्रतिशत कोरोना मुक्त हो गया। नवनिर्वाचित प्रधान के इस कार्य की जमकर प्रशंसा हुई। प्रसिद्धि दूर तक पहुंची तो राष्ट्रीय पंचायती राज ग्राम प्रधान संगठन के जिला अध्यक्ष की जिम्मेदारी भी उन्हें सौंप दी गई। गांव के विकास की जिम्मेदारियों के साथ ही उच्च शिक्षा प्राप्त (परास्नातक) अनुसूईया देवी संगठन के दायित्व का भी सफलतापूर्वक निर्वहन कर रही हैं। ग्राम पंचायत को कोरोना से मुक्ति दिलाने के बाद ग्रामीणों की एक और समस्या ग्राम में पंचायत भवन के निर्माण की ओर अनसूईया देवी ने ध्यान दिया। सक्षम अधिकारियों से सकारात्मक वार्ता कर उन्होंने गांव में पंचायत भवन का निर्माण भी कराया। स्वयं महिला होने के नाते महिलाओं की समस्या को अनुसूईया देवी अतिगंभीरता से लेती हैं। शासन द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के उत्थान के लिए चलाई जा रहीं विभिन्न योजनाओं का लाभ उनके गांव की महिलाओं को मिले इसके लिए वह निरंतर प्रयासरत रहती हैं। अनुसूईया देवी के पति सत्यपाल सिंह पं दीनदयाल उपाध्याय के अगाध प्रशंसक हैं। प्रतिनिधि प्रधान संगठन, गोरखपुर के जिलाध्यक्ष श्री सिंह भारतीय जनता पार्टी के बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ गोरखपुर क्षेत्र के सहसंयोजक की जिम्मेदारी भी निभाते हैं। श्री सिंह का कहना है अनुसूया देवी के प्रधान चुने जाने के बाद से ही समूचा ग्राम उनके लिए परिवार समान है।

ग्राम भारती

आवश्यकता है

सभी तहसीलों में संवाददाताओं एवं विज्ञापन प्रतिनिधियों की

संपर्क :WhatsApp 9140624166 **E-mail:grambhartilko@gmail.com**

हिंदी दिवस पर विशेष

घर में उपेक्षित हिंदी

डा. नीता सक्सेना

(भारतीय विद्या भवन, गर्ल्स डिग्री कालेज में प्रवक्ता)

किसी व्यक्ति की पहचान उसकी भाषा से होती है और अपने मनोभावों को व्यक्त करने का सबसे सहज और सर्वोत्तम माध्यम उसकी अपनी भाषा ही होती है, जितनी सहजता से अपनी बात अपनी भाषा में करते हैं अन्य किसी भाषा में कर ही नहीं सकते। भाषा संस्कृति की अधिष्ठात्री है या यूं कहें संस्कृति भाषा पर ही टिकी होती है राष्ट्र की संस्कृति अपनी भाषा के जरिए ही जीवित रहती है यदि भाषा का सम्मान कम होने लगे तो निश्चित ही हो संस्कृति का कोई नाम लेने वाला भी नहीं रहेगा।

'भाषा ही राष्ट्रीय साहित्य और संस्कृति का निर्माण करती है जब तक आपके पास राष्ट्रभाषा नहीं, आपका कोई राष्ट्र नही'।

मुंशी प्रेमचंद

सन १९५० में संविधान के अनुच्छेद ३४३ धारा १ में लिखा है कि हिंदी राष्ट्रभाषा होगी, किंतु इसी अनुच्छेद की धारा २ में यह भी लिखा है कि खंड १ की आगामी १५ वर्षों तक यानी सन १९६५ तक भारत संघ का समस्त कामकाज हिंदी या अंग्रेजी किसी भाषा में चला सकते हैं। संविधान लागू होने के १५ वर्ष बाद भी सन १९६५ में केंद्र सरकार द्वारा अंग्रेजी भाषा को राजभाषा बनाने का विधेयक संसद में रखा तब डा. राम मनोहर लोहिया ने लोकसभा में इसका डटकर विरोध ही नहीं किया अपितु युवा पीढ़ी को इसके विरोध में आंदोलित करने का आवाहन भी किया।

१४ सितंबर को ही हिंदी दिवस क्यों मनाया जाता है। इसके पीछे एक महत्वपूर्ण कारण है कि १३ व १४ सितंबर को सन १९४९ में भारत के संविधान में संघ की भाषा पर बहस हुई और १४ सितम्बर को हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया। इसलिए हम हर वर्ष १४ सितम्बर को ही हिन्दी दिवस मनाते हैं। दुर्भाग्य से इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। सरकारी कामकाज पूर्ववत अंग्रेजी में ही होता रहा।

सन १९५० में संविधान के अनुच्छेद ३४३ धारा १ में लिखा है कि हिंदी राष्ट्रभाषा होगी, किंतु इसी अनुच्छेद की धारा २ में यह भी लिखा है कि खंड १ की आगामी १५ वर्षों तक यानी सन १९६५ तक भारत संघ का समस्त कामकाज

बड़ी ही विडंबना है कि भारतवासी अपनी ही भाषा के महत्व को नहीं समझ रहे हैं और उस की उपेक्षा हो रही है, लेकिन विश्व के अन्य विकसित देश अपनी भाषा की अनदेखी नहीं करते हैं जैसे अमेरिका में ५२ मुख्य बोलियां, ३३७ उप बोलियां बोली जाती हैं बहुभाषी अमेरिका के राज्यों में आज भी अंग्रेजी को राजभाषा नहीं बनाया गया, कुछ राज्यों में जैसे न्यू मैक्सिकों सेंट एन्टीनियो और अर्कसान्स में आज भी क्षेत्रीय भाषाओं में काम सफलतापूर्वक किया जा रहा है।

हिंदी या अंग्रेजी किसी भाषा में चला सकते हैं। संविधान लागू होने के १५ वर्ष बाद भी सन १९६५ में केंद्र सरकार द्वारा अंग्रेजी भाषा को राजभाषा बनाने का विधेयक संसद में रखा तब डा. राम मनोहर लोहिया ने लोकसभा में इसका डटकर विरोध ही नहीं किया अपितु युवा पीढ़ी को इसके विरोध में आंदोलित करने का आवाहन भी किया।

सन १९६७ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अंग्रेजी को राजभाषा जारी कर रखने वाले विधायक के विरोध में 'अंग्रेजी हटाओ आंदोलन' प्रारंभ किया। मानसिक स्वतंत्रता के नाम पर केवल दक्षिण प्रांतों को छोड़कर पूरे भारत को युवा वर्ग ने आंदोलित किया।

'अंग्रेजी में काम ना होगा, फिर से देश गुलाम ना होगा
गांधी,लोहिया की अभिलाषा चले देश में देसी भाषा'।।

जैसे नारों की गूंज चारों ओर सुनाई देने लगी हजारों छात्र-छात्राएं विद्यालय-विश्वविद्यालय का बहिष्कार कर सड़कों पर उतर आए अंग्रेजी भाषा विरोधी विधेयक से अंग्रेजी भाषा और भारत संघ सरकार की स्थिति कमजोर पड़ने लगी अंग्रेजी भाषा की विदाई की पूरी तैयारी थी। अकस्मात लोहिया जी के निधन से अथक प्रयासों के बावजूद भी आंदोलन की गति शिथिल हो गई।

गैर हिंदी राज्यों विशेषकर दक्षिण राज्यों को ऐसा लगने लगा कि हिंदी उन पर थोपी जा रही है। दक्षिण भारतीयों की सोच थी कि जब अंग्रेजी से काम चल, सकता है तो हिंदी की क्या आवश्यकता। ग़ैर हिंदी भाषी राज्य के साथ दक्षिण प्रदेशों के अत्याधिक दबाव के कारण विधेयक पारित हो गया। परिणाम हमारे सामने है आज भी सरकारी काम राज हिंदी की अपेक्षा अंग्रेजी में अधिक होता है। वर्तमान में हिंदी की अपेक्षा अंग्रेजी को ही अधिक महत्व दिया जा रहा है।

बड़ी ही विडंबना है कि भारतवासी अपनी ही भाषा के महत्व को नहीं समझ रहे हैं और उस की उपेक्षा हो रही है, लेकिन विश्व के अन्य विकसित देश अपनी भाषा की अनदेखी नहीं करते हैं जैसे अमेरिका में ५२ मुख्य बोलियां, ३३७ उप बोलियां बोली जाती हैं बहुभाषी अमेरिका के राज्यों में आज भी अंग्रेजी को राजभाषा नहीं बनाया गया, कुछ राज्यों में जैसे न्यू मैक्सिकों सेंट एन्टीनियो और अर्कसान्स में आज भी क्षेत्रीय भाषाओं में काम सफलतापूर्वक किया जा रहा है। इसी तरह यूरोप के कुछ राज्यों को छोड़कर अन्य महत्वपूर्ण देशों में भी अंग्रेजी ना के बराबर बोली जाती है एवं सभी सरकारी कामकाज अपनी भाषा में ही किया जाता है।

इसी तरह अफ्रीकी देशों में भी बोलने से लेकर कामकाज में अंग्रेजी भाषा का उपयोग नगण्य है जापान, चीन, कोरिया, फ्रांस, जर्मनी बहुत से देश हैं जो अमेरिका या इंग्लैंड से किसी तरह कम नहीं हैं लेकिन अपने कार्य क्षेत्र में अपनी भाषा का उपयोग करते हैं और आज प्रगति के सोपान पर अग्रसर हैं। हिंदी हिन्दुस्तान की पहचान है किन्तु हिंदी को वह सम्मान नहीं मिल पाया जो अंग्रेजी को प्राप्त है। इस बात से भी हैरत होती है कि इतनी निराशापूर्ण स्थिति के बाद भी हिंदी विश्व की लोकप्रिय एवं अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में से एक है और विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा है, त्रिनीदाद, मारीशस, फिजी, दक्षिण अफ्रीका में हिंदी बोली समझी जाती है। पड़ोसी देशों में जैसे नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान यहां तक दूर इंग्लैंड और कनाडा जैसे देशों में भी हिंदी बोल कर काम

चलाया जा सकता है। विदेशों में हिंदी की लोकप्रियता का इसी बात से पता चलता है कि वाशिंगटन यूनिवर्सिटी के डिपार्टमेंट आफ एशियन लैंग्वेज एंड लिटरेचर में स्नातक एवं स्नातकोत्तर में हिंदी साहित्य एवं भाषा के विभिन्न पाठयक्रम चलाए जा रहे हैं।

स्कूलों में हिंदी की पढ़ाई और पाठयक्रम को लेकर जर्मनी और भारत सरकार के बीच कई महत्वपूर्ण समझौते हुए हैं। भारत एवं चीन के राजनीतिक मतभेद के बावजूद भी दोनों देशों के बीच भाषाई सहयोग में वृद्धि हुई है, यह एक सकारात्मक संकेत है कि चीनी विद्यार्थी प्रतिवर्ष भारत अध्ययन शोध के लिए आते हैं भारत से आध्यात्म दर्शन के प्रति व्यापक दृष्टिकोण लेकर वापस जाते हैं। एक आम धारणा है कि अंग्रेजी विश्व भाषा है अगर तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो हिंदी में साहित्य का अतुल खजाना है। प्राचीनकाल से हमारे मुनियों ने विज्ञान, योग, आयुर्वेद आदि में जितना कार्य किया है वह सब अपनी भाषा में ही किया है जिसकी कोई तुलना नहीं है। यही भारतीय संस्कृति दुनिया में एक विशेष स्थान दिलाती है। विश्व की अन्य भाषाओं में अत्यंत एवं गंभीर विषयों पर कार्य हुए हैं लेकिन अल्पज्ञान के कारण अंग्रेजी को उत्कृष्ट समझते हैं।

जबकि आज विज्ञान में जितने शोध और अनुसंधान हुए, जितनी विज्ञान की पुस्तकें रूसी भाषा में हैं अन्य किसी भाषा में उपलब्ध नहीं है। लोकप्रिय फ्रांसीसी भाषा अनेक महत्वपूर्ण दर्शन इतिहास और साहित्य का संगम है। दुनिया के बड़े-बड़े अखबार आज भी हिंदुस्तान जापान और रूस से निकल रहे हैं, लेकिन हम अपनी भाषा हिंदी को अपने ही घर में पराया बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं।

भारत में हिन्दी की स्थिति को देखते हुए फादर डाक्टर कामिल बुल्के ने कहा 'भारत पहुंचकर मुझे बहुत दुख हुआ कि बहुत से शिक्षित लोग अपनी संस्कृति से अनभिज्ञ हैं और अंग्रेजी बोलना तथा विदेशी सभ्यता में रंग जाना गौरव की बात समझते हैं' सही विश्लेषण किया डाक्टर बुल्के ने इसी प्रसंग को आगे बढ़ाते हुए मैं आंखों देखा हाल आपके साथ साझा कर रही हूं इसी वर्ष स्वतंत्रता दिवस पर शहर के प्रतिष्ठित विद्यालय में अतिथि के रूप में जाने का अवसर मिला। बच्चों ने बहुत ही सुंदर रोचक ढंग से पूरा कार्यक्रम अंग्रेजी में प्रस्तुत किया।

मुझे हैरानी इस बात की हुई कि स्वाधीनता दिवस पर एक भी गाना या भाषण हिंदी में नहीं था। बच्चे कितने प्रतिभाशाली हैं अंग्रेजी धाराप्रवाह बोल रहे थे, लेकिन मेरा मन व्यथित हो रहा था कि जिस अंग्रेजी सरकार से आजादी पाने के लिए हजारों भारतीयों ने अपनी जान की परवाह किए बिना सर्वस्व लुटा दिया और हम हैं कि आज भी मानसिक रूप से अंग्रेजी जंजीरों में जकड़े हुए हैं। यह मानसिक परतंत्रता नहीं तो क्या है ? अंग्रेजी को जानना पढ़ना उसमें ज्ञान अर्जित करना बहुत अच्छी बात है लेकिन यहां तो आंग्ल भाषा को उस उत्कृष्ट समझा जा रहा है।

बच्चों पर अंग्रेजी अनिवार्य रूप से थोपी जा रही है क्या यह सही है ? विद्याथी शेक्सपियर तो पढ़ लेंगे लेकिन सूर तुलसी मीरा के भक्ति रस से बिहारी कालिदास की विद्वता एवं काव्य रस के आनंद से वंचित रह जाएंगे। अपनी संस्कृति और सभ्यता से अनभिज्ञ ही रहेंगे। मैं व्यक्तिगत रूप से की अंग्रेजी पढ़ने की विरोधी नहीं हूं किन्तु दुख तो तब होता है जब हमारे नन्हे मुन्ने को छोड़िए किशोर या युवा पीढ़ी भी हिंदी की गिनती भी नहीं जानते सच कहूं तो शर्म आती है, जब बच्चों के माता-पिता भी इस बात से घर में गौरवान्ति होते हैं कि मेरे बच्चे तो अड़सठ, सत्तर, चौवालिस की गिनती जानते ही नहीं। दिखाना बताना चाहते हैं यह अभिभावक। गलती बच्चों की नहीं हमारी है। हम हिंदी लिखना बोलना सीखते ही नहीं केवल अंग्रेजी पढ़ाकर अंग्रेजी रटटू तोता बना रहे हैं।

इस तरह दयनीय दशा को देखकर अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि डब्ल्यू.बी. यीस्ट ने सत्य ही कहा है 'भारत में अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा प्रणाली चलाकर ब्रिटेन ने भारत का सबसे ज्यादा नुकसान किया है। यहां भव्य लोगों की आत्माओं में हीनता की भावना भरकर नकलची बना दिया'।

अपने देश की संस्कृति को जानने के लिए और समझने के लिए अपनी भाषा को पढ़ें जानें एवं हिंदी का सम्मान करें। यह बिल्कुल अकाट्य सत्य है किसी राष्ट्र की संस्कृति और पहचान को नष्ट करने का सुनिश्चित तरीका उसकी भाषा को हीन बना देना है। अपने राष्ट्र की प्रगति व सम्मान के लिए किसी दशा में हिंदी का महत्व कम ना होने दें आज हिंदी को गर्व के साथ अपनाने की आवश्यकता है नहीं तो वह दिन दूर नहीं जब हम अपने ही देश में परदेसी होंगे।

हिंदी दिवस की शुभकामनाओं के साथ।

अन्त्योदय से राष्ट्रोदय के नायक : पं दीनदयाल उपाध्याय

मृत्युंजय दीक्षित

पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक ऐसे महान व्यक्तित्व थे, जिन्होंने अभावों के बीच जीवन की नई ऊचाईयों को छुआ। वह एक गंभीर दार्शनिक, गहन चिंतक होने के साथ- साथ एक समर्पित संगठनकर्ता और नेता थे। दीनदयाल जी का जन्म २५ सितम्बर १९१६ को हुआ। बचपन जसपुर से अजमेर मार्ग पर स्थित ग्राम धनकिया में अपने नाना पंडित चुन्नीलाल के घर पर बीता। तीन वर्ष की अवस्था में ही उनके पिता व आठ वष की अवस्था में माता जी का देहान्त हो गया। उनका लालन पालन उनके मामा ने किया। इनके बचपन में एक ज्योतिषी ने इनकी कुंडली देखकर भविष्यवाणी की थी कि यह बालक एक महान विचारक और अग्रणी नेता बनेगा। यह सेवाव्रती होगा और विवाह नहीं करेगा। उनकी हाई स्कूल की शिक्षा राजस्थान के सीकर में हुई। इंटर की परीक्षा पिलानी में विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण की। अपने एक मित्र की प्रेरणा से वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े और फिर बीए की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में पास की। इसके बाद वह आगे एम. ए. की पढ़ाई के लिए आगरा आ गये।

यहां पर उनका परिचय नाना जी देशमुख और श्रीभाउ जुगड़े से हुआ। बी.टी. का कोर्स करने के लिए दीनदयाल जी प्रयाग आ गये और यहां पर संघ की सेवा जारी रखी। अब वह संघ में पूर्णकालिक रूप से समर्पित हो गये १९४५ में वे संघ के उप्र के सह प्रांत प्रचारक बन गये। उन्होंने लखनऊ में राष्ट्रधर्म नामक संस्थान की स्थापना की और यहां से राष्ट्रधर्म नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया।

जब डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारतीय जनसंघ की स्थापना की तब उन्हें महामंत्री बनाया गया। डा. मुखर्जी ने उनकी कार्यकुशलता और क्षमता से प्रभावित होकर कहा कि, 'यदि मुझे दो दीनदयाल मिल जायें तो मैं भारतीय राजनीति का नक्शा बदल दूं।'

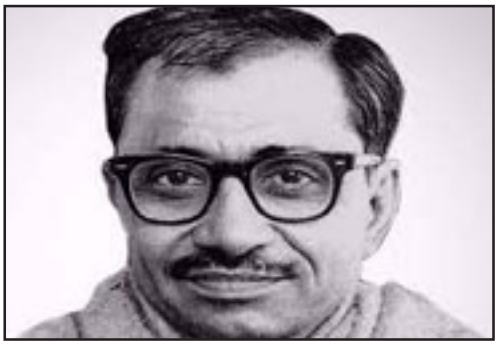

१९५३ के कश्मीर सत्याग्रह में डा. मुखर्जी की मृत्यु के बाद जनसंघ की पूरी जिममेदारी दीनदयाल जी पर आ गयी। वे कुशल संगठक, वक्ता, लेखक, पत्रकार और चिंतक थे। एकात्म मानववाद के नाम से उन्होंने नया आर्थिक एवं सामाजिक चिंतन दिया जो साम्यवाद और पूंजीवाद की विसंगतियों से ऊपर उठकर देश को सही दिशा दिखाने में सक्षम है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने देश को एक नया विचार दिया और वह था 'अंत्योदय'।

पंडित दीनदयाल जी का नाम चिरस्मरणीय महापुरूष के रूप में लिया जाता है। क्योंकि उनके विचार दूरदृष्टि के अंत्योदय के माध्यम से ही समग्र राष्ट्र ही नहीं, समग्र विश्व का समग्र विश्व का विकास हो सकता है। पंडित दीनदयाल जी के अंत्योदय का अर्थ है - 'समाज की अंतिम पंक्ति के व्यक्ति का उदय'। जिसका सरल अर्थ यह है कि समाज के पिछड़े ,अतिपिछड़े लोगों का उत्थान करना, गरीबों और पिछड़े वर्गों को दूसरे वर्गों के समान लाना।

पंडित दीदयाल उपाध्याय की दृष्टि में पिछड़े वर्गों के विकास के लिए चलाई जा रही आरक्षण व्यवस्था में बहुत व्यापक अंतर है। इसीलिए पिछड़े लोगों का विकास और उत्थान सही रीति से नहीं हो पा रहा है। गुणवत्ता तथा मेघा के क्षेत्र में अनुसूचित समुदाय के लोग सामान्य वर्गों से काफी पिछड़े हुए ही रहते हैं। पंडित दीनदयाल जी का अंत्योदय वर्तमान आरक्षण व्यवस्था के विपरीत सही मायने में समाज के अंतिम पंक्ति के अर्थात गरीब से गरीब एवं पिछड़े से पिछड़े वर्गों को गुणवत्ता एवं मेधा के

पंडित दीनदयाल जी का नाम चिरस्मरणीय महापुरूष के रूप में लिया जाता है। क्योंकि उनके विचार दूरदृष्टि के अंत्योदय के माध्यम से ही समग्र राष्ट्र ही नहीं, समग्र विश्व का समग्र विश्व का विकास हो सकता है। पंडित दीनदयाल जी के अंत्योदय का अर्थ है - 'समाज की अंतिम पंक्ति के व्यक्ति का उदय'।

मामले में दूसरों के बराबर लाना था। उनका अंत्योदय का विचार व्यक्ति की सर्वांगीण उन्नति के विविध आयामों का परिचायक था। उनका विचार था कि सृष्टि के आरम्भ में सभी मानवजाति समान थीं। कालक्रम में जातिप्रथा की कुरीति के प्रचलन के बाद छुआछूत की जो गलत धारा चल पड़ी उसने समग्र समाज को पंगु बना दिया। अगड़ों और पिछड़ों के बीच खाई पैदा हो गई। दीनदयाल जी समस्त मानव जाति को एक ईश्वर की संतान मानकर बराबर मानते थे। किसी के बीच कोई अंतर या भेदभाव नहीं करते थे। पिछड़े वर्गों का हर तरह से उत्थान करना चाहते थे। वर्तमान व्यवस्था की तरह झूठी सुविधाएं, कोरी रियायतें प्रदान कर उनकी बौद्धिक अधोगति नहीं करना चाहते थे।

केंद्र व राज्य सरकार की बहुत सारी योजनाओं से पिछड़ों, अतिपिछड़े व गरीब महिलाओं के जीवन में व्यापक बदलाव आ रहा है। प्रधानमंत्री जन-धन योजना हो या फिर गांव अति गरीब महिलाओं को निःशुल्क रसोई गैस का सिलेंडर उपलब्ध कराना हो इन सभी योजनाओं से समाज के अंतिम पायदान के व्यक्ति को सीधा लाभ हो रहा है। आज जिन महिलाओं को निःशुल्क रसोई गैस का सिलेंडर मिला हे वह पीएम मोदी को धन्यवाद कह रही हैं कि अब उन्हें धुएं की समस्या से निजात मिल गयी है और परिवार के लिये भोजन बनाना भी आसान हो गया है। अब हर गरीब का बैंक में अपना एकाउंट होने से उसका अपना धन सुरक्षित जगह पर पहुंच गया है। अभी तक गांवों में अनपढ़ और सीधे -सादे ग्रामीण लोगों को पता नही होता था कि बैंकों में खाता कैसे खोला जाता है। अब नई व्यवस्था में बहुत सारी योजनाओं का धन गांव के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को सीधे उनके खाते में ही मिल रहा है। किसान सम्मान निधि का धन सीधे किसानो के खाते में जा रहा है जिसका लाभ समाज के अंतिम पायदान पर खड़े किसान को हो रहा है। यह किसान भी पिछड़े और अति पिछड़े समाज के ही हैं।

पंडित दीनदयाल जी के विचारों, सिद्धांतों एव संकल्पों को साकार करने के लिए काफी प्रयास किये जा रहे हैं। कई योजनाओं व संस्थानों के नाम उनके नाम पर रखे गये हैं। जैसे 'दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना' दीनदयाल जी को सम्मान देने के लिए मुगलसराय रेलवे स्टेशन का नाम भी उनके नाम पर कर दिया गया है। उप्र में दीनदयाल जी के नाम पर शोधपीठ की भी स्थापना कई विश्वविद्यालयों में की जा रही है। उनके नाम से 'अंत्योदय आवास योजना' शुरू की गई है। इसमें नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र में निम्न एवं मध्यम आय वर्ग के लिए आवास बनाये जा रहे हैं। आज जितनी भी योजनाओं व कार्यक्रमों का ऐलान हो रहा है तथा चलाये जा रहे हैं उनमें अंत्योदय के उत्थान की भावना ही है।

अभी कोरोना महामारी के दौरान केंद्र सरकार व राज्य सरकारों ने जिस अन्न-धन महोत्सव का आयोजन किया और ८० करोड़ आबादी को फ्री राशन वितरण किया गया, उसमें भी अंत्योदय की भावना का ही संदेश छिपा था। सरकार ने अपनी योजना से कोरोना महामारी के कालखंड में किसी भी गरीब को भूखा नहीं सोने दिया। यह अंत्योदय की एक अच्छी भावना थी। सरकार की इस योजना का लाभ गरीब से गरीब समाज को मिल रहा है।

उपाध्याय जी ने अंत्योदय का जो सिद्धांत दिया वह अब देशभर में प्रचलित और लोकप्रिय हो रहा है। अंत्योदय की भावना के अनुरूप ही कौशल विकास मिशन जैसी योजनाएं चलायी जा रही हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज जिस आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना प्रस्तुत कर रहे हैं वह भी अंत्योदय के विचारों को ही संबल प्रदान कर रहा है। लोकल से ग्लोबल का विचार भी अंत्योदय का मजबूत कर रहा है। आज भारत अंत्योदय के विचारों के अनुरूप ही आगे बढ़ रहा है और विश्वगुरू बनने की ओर अग्रसर है। ऐसे महान लेखक, विचारक व संगठनकर्ता पंडित दीनदयाल जी को पूरा भारत नमन करता है याद करता है। पंडित दीनदयाल जी में जरा सा भी अहंकार नहीं था। ११ फरवरी १९६८ को मुगलसराय रेलवे स्टेशन पर उनकी हत्या कर दी गयी। **(लेखक-स्वतंत्र पत्रकार हैं)**

खेत-खलिहान

अक्टूबर माह के कृषि कार्य

अक्टूबर का महीना रबी फसलों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इस महीने में मुख्य रूप से गेहूं, चना, सरसों, आलू आदि फसलों में कार्य किये जाने की आवश्यकता होती है। किसान भाई अक्टूबर माह में क्या-क्या कृषि कार्य करें। किन फसलों की बुआई करनी है, किन फसलों में सिंचाई करनी है, और किन फसलों में उर्वरक, कीटनाशक का प्रयोग करना है यह जानना अति आवश्यक है। यहां कृषि वैज्ञानिकों के परामर्श के अनुरूप अक्टूबर माह में किये जाने वाले कृषि कार्यों की विस्तार से जानकारी प्रस्तुत की जा रहा है। जानकारी को संबंधित क्षेत्रों के कृषि विशेषज्ञों से परामर्श के उपरान्त ही उपयोग में लाएं। **संपादक**

गेहूँ

गेहूँ की समय पर बुआई के लिए (सिंचित क्षेत्र): के ९१०७ (देवा), एच.यू.डब्लू-४६८ बिरसा गेहूँ ३, समय पर बुआई के लिए (असिंचित क्षेत्र): के ९१०७ (देवा) देर से बुआई के लिए (सिंचित क्षेत्र): एच.यू.डब्लू २३४, डी.व्ही.डब्लू १४ की अनुशंषा की जाती है।

जैट्रोफा

कीट नियंत्रण: कोमल पौधों में कटुवा (सुंडी) तने को काट सकता है। इसके लिए लिन्डेन या फालीडाल धूल का सूखा पाउडर भूरकाव से नियंत्रित किया जा सकता है। माइट के प्रकोप से बचाव के लिए १ मि.ली. मेटासिस्टाक्स दवा को १ लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

संकर धान

शीथ ब्लाइट की रोकथाम के लिए हेक्साकोनाजोल (कोंटाफ) ०.२ या वर्लीडामायसीन का ०.२५ का छिड़काव करें ।

चना

(१) समय पर बुवाई के लिए प्रति हेक्टर में लगभग ७० किलोग्राम (१०० दानों का वजन लगभग १५ ग्राम) या ६० किलोग्राम (१०० दानों का वजन लगभग २५ ग्राम) बीज दर रखनी चाहिए। देर से बुवाई के लिए बीज की मात्रा २० अधिक रखनी चाहिए।

(२) उकठा रोग से बचाव के लिए वीटावेक्स फफूंदीनाशक तथा ट्राइकोडर्मा फफूंद के साथ मिलाकर बीज का उपचार करना चाहिए तथा खड़ी फसल में १ ग्राम बैविस्टीन को एक लीटर पानी (०.१) में घोलकर पौधों की जड़ के पास छिड़काव करना चाहिए।

तीसी

(१) बुआई के लिए टी ३९७ तथा श्वेता इन किस्मों की

अनुशंषा की जाती है।

(२) असिंचित अवस्था में बोआई मध्य अक्टूबर में करें, अन्यथा बीज अंकुरण में नमी की कमी बाधा बन जाती है। यदि खेत में पर्याप्त नमी उपलब्ध हो तो बोने की अवधि मध्य

नवम्बर तक बढ़ाई जा सकती है। सिंचित अवस्था में इसकी बुआई मध्य नवम्बर तक की जा सकती है।

राई-सरसों

(१) राईः राई की अधिक उपज देने वाली किस्में क्रमशः शिवानी, पूसा बोल्ड, कान्ति, पूसा महक, पूसा अग्रणी एवं वरुणा है। राज्य में शिवानी सिंचित एवं असिंचित अवस्था दोनों के लिए उपयुक्त हैं।

(२) राई (सिंचित अवस्था में): ८०:४०:२०:४० किलोग्राम नेत्रजनः फास्फोरसः पोटाशः तथा सल्फर प्रति हेक्टेयर की दर से तथा असिंचित अवस्था में ४०:२०:२०:२० किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से देना उत्तम है।

सरगुजा

चूर्ण फफूंद रोग से फसल को बचाने के लिए ०.३ सल्फेक्स का छिड़काव करना चाहिए।

आलू

अधिक उपज प्राप्त करने के लिए १२० किलोग्राम नेत्रजन, १०० किलोग्राम स्फुर, १०० किलोग्राम पोटाश तथा २४ किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टर की दर से रासायनिक खाद के साथ प्रयोग करें।

आम

(१) बगीचों में खरपतवार नियंत्रण हेतु जुताई करें।

(२) छोटे पौधों को पाला से बचाने के लिए नियमित सिंचाई करें

लीची

लीची की मकड़ी (लीची माइट) के रोकथाम के लिए समय-समय पर ग्रसित पत्तियों एवं टहनियों को काटकर जला देना चाहिए। नई कोपलों के आगमन के समय केलथेन या फासफामिडान (१.२५ मि.ली./लीटर) का घोल बनाकर ७-१० दिन के अंतराल पर दो छिड़काव लाभप्रद पाया गया है।

केला

पौधों के नीचे पुआल अथवा गन्ने की पत्ती की ८ सेंमी मोटी पर्त बिछा देनी चाहिए। इससे सिंचाई की संख्या में ४० प्रतिशत की कमी हो जाती है, खरपतवार नहीं उगती तथा उपज एवं भूमि की उर्वराशक्ति बढ़ जाती है।

अमरुद

तना वेधक कीट के रोकथाम के लिए तनें के छिद्रों को साफ़ कर नुवान (२ मि.ली./ली. पानी) के घोल में रुई भिगों कर छिद्रों में भर कर गीली मिट्टी से बंद कर देते हैं

काजू

काजू के पौधों को प्रारंभिक अवस्था में अच्छा ढांचा देने की जरूरत होती है। उपयुक्त काट-छांट के द्वारा पौधों को अच्छा ढांचा के तत्पश्चात फसल तोड़ाई के बाद सुखी, रोग एवं कीट ग्रसित शाखाओं को कैंची से काटते रहें।

पशुपालन

थैलेरियोसिस बेरीनील ५ ग्राम दवा में १५ मि.ली. पानी घोलकर ५ मि.ली. प्रति १०० किलो शरीर भार पर मांस में सूई दें। सूई अ क्सीटेट्रासाइक्लीन १५ से २० मि. ग्राम की दर से नस में ५ -७ दिन तक सूई दें।

स्रोतः विकासपीडिया एवं राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड)

कृषि कानूनों का एक साल !

नहीं टूट रहा किसानों और सरकार के बीच गतिरोध

ग्राम भारती ब्यूरो एवं पीआईबी

कृषि सुधार और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए बनाए गए कृषि कानूनों को बने एक साल पूरा हो गया है। सरकार ने पहले अध्यादेश और बाद में संसद में विधेयक लाकर कानून बनाए हैं। दो कानून नए बनाए गए हैं, जबकि एक कानून पहले से मौजूद था। इसमें संसोधन किया गया है। तीनों कानूनों को किसानों ने स्वीकार नहीं किया। इसलिये, इन कानूनों पर अभी तक सरकार और किसान संगठनों के बीच गतिरोध बरकरार है। किसान संगठन कानून बनने के दो महीने बाद ही आंदोलन रत हो गए थे। पहले किसानों ने पंजाब और हरियाणा में आन्दोलन किया। बाद में दिल्ली के बार्डर पर धरना शुरु कर दिया गया।

यह धरना दस महीने से लगातार जारी है। जबकि आन्दोलन के कई पड़ाव पूरे हो चुके हैं। इसमें ट्रैक्टर रैली, भारत बंद आदि शामिल हैं। वहीं सरकार सरकार भी किसानों से कई दौर की बातचीत कर चुकी है, लेकिन गतिरोध टूटने का नाम नहीं ले रहा है। किसान संगठनों की मांग है कि कानूनों को वापल लिया जाए और फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की गारंटी देने वाला कानून बनाया जाए। जबकि सरकार कानूनों में आवश्यक संशोधन करने को तैयार है।

मामला अभी सर्वोच्च न्यायालय में भी विचाराधीन है, क्योंकि कुछ लोग सर्वोच्च न्यायालय गए थे, जहां सर्वोच्च न्यायालय ने कानूनों के क्रियान्वयन पर रोक लगा दी तथा कानूनों का परीक्षण करने के लिए एक समिति बना दी। समिति अपनी रिपोर्ट दे चुकी है। लेकिन, अभी तक सर्वोच्च न्यायालय ने न तो इसे सार्वजनिक किया है और न ही इस पर कोई फैसला हुआ है।

तीन जून २०२० को अध्यादेश को मंजूरी

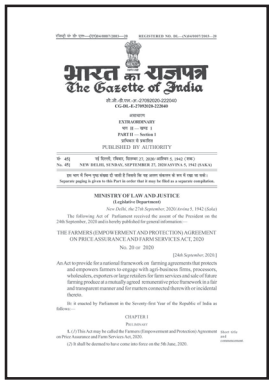
भारत का राजपत्र
The Gazette of India

केन्द्र सरकार ने तीनों कृषि कानूनों के लिए तीन जून २०२० को अध्यादेश के जरिये इन्हें स्वीकृति प्रदान की थी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आयोजित कैबिनेट की बैठक में किसानों को लाभान्वित करने और कृषि क्षेत्र में आमूलचूल बदलाव के लिए ऐतिहासिक निर्णय लिए गए ।

इन फैसलों में जहां 'आवश्यक वस्तु अधिनियम' में संशोधन के जरिए किसानों के लिए नियामकीय व्यवस्था को उदार बनाया गया , वहीं कृषि उपज के बाधा मुक्त अंतर-राज्यीय व्यापार के साथ-साथ राज्य के भीतर भी व्यापार को बढ़ावा देने के लिए अध्यादेश लाने को मंजूरी दी गई। इसके साथ ही प्रोसेसरों, समूहकों, थोक विक्रेताओं, बड़े रिटेलरों और निर्यातकों के साथ सौदे करने, किसानों को सशक्त बनाने के लिए अध्यादेश लाने की स्वीकृति प्रदान की गई।

राष्ट्रपति ने २७ सितंबर को दी स्वीकृति

इसके उपरान्त ये कानून संसद में पारित कराए गये। इनके लिए विधेयक लाए गए। दो कानूनों से संबंधित विधेयक १४ सितंबर को लोकसभा में प्रस्तुत किये गए और १७ सितंबर को लोकसभा ने इन्हें पारित कर दिया। जबकि राज्यसभा में दोनों कानून २० सितंबर को पारित हुए। कानूनों को राष्ट्रपति ने २७ सितंबर को स्वीकृति प्रदान कर दी। उसी दिन कानूनों से संबंधित अधिसूचना भी जारी कर दी गई।

क्या हैं कृषि कानून

१. आवश्यक वस्तु अधिनियम में संशोधन

केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने तीन जून को आवश्यक वस्तु अधिनियम में ऐतिहासिक संशोधन को मंजूरी दी। वैसे तो

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

भारत में ज्यादातर कृषि जिंसों या वस्तुओं के उत्पादन में अधिशेष (सरप्लस) की स्थिति है, लेकिन इसके बावजूद कोल्ड स्टोरेज, प्रसंस्करण और निर्यात में निवेश के अभाव में किसान अपनी उपज के उचित मूल्य पाने में असमर्थ रहे हैं, क्योंकि आवश्यक वस्तु अधिनियम की लटकती तलवार के कारण उनकी उद्यमशीलता हतोत्साहित हो जाती है। ऐसे में जब भी शीघ्र नष्ट हो जाने वाली कृषि उपज की बंपर पैदावार होती है, तो किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ता है। यदि पर्याप्त प्रसंस्करण सुविधाएं उपलब्ध हों तो बड़े पैमाने पर इस तरह की बर्बादी को रोका जा सकता है।

आवश्यक वस्तु अधिनियम में संशोधन के जरिए अनाज, दलहन, तिलहन, खाद्य तेलों, प्याज और आलू जैसी वस्तुओं को आवश्यक वस्तुओं की सूची से हटा दिया जाएगा। इस व्यवस्था से निजी निवेशक अत्यधिक नियामकीय हस्तक्षेप के भय से मुक्त हो जाएंगे। उत्पादन, भंडारण, ढुलाई, वितरण और आपूर्ति करने की आजादी से व्यापक स्तर पर उत्पादन करना संभव हो जाएगा और इसके साथ ही कृषि क्षेत्र में निजी, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (Private capital and FDI) को आकर्षित किया जा सकेगा। इससे कोल्ड स्टोरेज में निवेश बढ़ाने और खाद्य आपूर्ति श्रृंखला (सप्लाई चेन) के आधुनिकीकरण में मदद मिलेगी।

सरकार का कहना है कि उसने नियामकीय व्यवस्था को उदार बनाने के साथ ही उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा भी सुनिश्चित की है। संशोधन के तहत यह व्यवस्था की गई है कि अकाल, युद्ध, कीमतों में अभूतपूर्व वृद्धि और प्राकृतिक आपदा जैसी परिस्थितियों में इन कृषि उपजों की कीमतों को नियंत्रित किया जा सकता है। हालांकि, मूल्य श्रृंखला (वैल्यू चेन) के किसी भी प्रतिभागी की स्थापित क्षमता और किसी भी निर्यातक की निर्यात मांग इस तरह की स्टाक सीमा लगाए जाने से मुक्त रहेगी, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कृषि क्षेत्र में निवेश हतोत्साहित न हो। घोषित संशोधन मूल्यों में स्थिरता लाने के साथ-साथ किसानों और उपभोक्ताओं दोनों ही के लिए मददगार साबित होगा। इसके साथ ही भंडारण सुविधाओं के अभाव के कारण होने वाली कृषि उपज की बर्बादी को भी रोका जा सकेगा।

२. कृषि उपज व्यापार एवं वाणिज्य (संवर्धन एवं सुविधा) अध्यादेश/ विधेयक २०२०

कई तरह के नियामक प्रतिबंधों के कारण किसानों अपने उत्पाद बेचने में काफी दिक्कत आती है। अधिसूचित 'कृषि उत्पाद विपणन समिति' वाले बाजार क्षेत्र के बाहर किसानों पर उत्पाद बेचने पर कई तरह के प्रतिबंध हैं। उन्हें अपने उत्पाद सरकार द्वारा लाइसेंस प्राप्त खरीददारों को ही बेचने की बाध्यता है। इसके अतिरिक्त एक राज्य से दूसरे राज्य को ऐसे उत्पादों के सुगम व्यापार के रास्ते में भी कई तरह की बाधाएं हैं। इन बाधाओं को दूर करने के लिए अध्यादेश लाया गया बाद में इसे विधेयक के जरिये कानून का रूप दिया गया। इससे किसानों के लिए एक सुगम और मुक्त माहौल तैयार हो सकेगा जिसमें उन्हें अपनी सुविधा के हिसाब से कृषि उत्पाद खरीदने और बेचने की आजादी होगी।

राज्य के भीतर और बाहर दोनों ही जगह ऐसे बाजारों के बाहर भी कृषि उत्पादों का उन्मुक्त व्यापार सुगम हो जाएगा जो राज्यों के कृषि उत्पाद विपणन समिति (एपीएमसी) अधिनियम 'Agricultural Produce Marketing Commodity (APMC) Act' के तहत अधिसूचित हैं। इससे किसानों को अधिक विकल्प मिलेंगे। बाजार की लागत कम होगी और उन्हें अपने उपज की बेहतर कीमत मिल सकेगी। इसके अलावा अतिरिक्त उपज वाले क्षेत्रों में भी किसानों को उनके उत्पाद के अच्छे दाम मिल सकेंगे और साथ ही दूसरी और कम उपज वाले क्षेत्रों में उपभोक्ताओं को भी ज्यादा कीमतें नहीं चुकानी पड़ेंगी।

अध्यादेश/ विधेयक में कृषि उत्पादों का सुगम कारोबार सुनिश्चित करने के लिए एक ई-प्लेटफार्म बनाए जाने का

भी प्रस्ताव है। इस अधिनियम के तहत किसानों से उनकी उपज की बिक्री के लिए कुछ भी उपकर (सेस) या शुल्क नहीं लिया जाएगा। इसके अलावा, किसानों के लिए एक अलग विवाद समाधान व्यवस्था होगी। विधेयक का मूल उद्देश्य 'एपीएमसी' बाजारों की सीमाओं से बाहर किसानों को कारोबार के अतिरिक्त अवसर मुहैया कराना है,जिससे कि उन्हें प्रतिस्पर्धात्मक माहौल में अपने उत्पादों की अच्छी कीमतें मिल सकें। यह न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर खरीद की मौजूदा प्रणाली के पूरक के तौर पर काम करेगा जो किसानों को स्थिर आय प्रदान कर रही है। यह निश्चित रूप से 'एक देश, एक कृषि बाजार' बनाने का मार्ग प्रशस्त करेगा और कठोर परिश्रम करने वाले हमारे किसानों के लिए उपज की मुंह मांगी कीमत सुनिश्ति करेगा।

३. 'मूल्य आश्वासन पर किसान (बंदोबस्ती और सुरक्षा) समझौता और कृषि सेवा अध्यादेश/ विधेयक २०२०

भारतीय कृषि को खेतों के छोटे आकार के कारण विखंडित खेती के रूप में वर्गीत किया जाता है और मौसम पर निर्भरता, उत्पादन की अनिश्चितता और बाजार अनिश्चितता इसकी कुछ कमजोरियां हैं। इसके चलते कृषि जोखिम भरी है और इनपुट तथा आउटपुट प्रबंधन के मामले में अप्रभावी है। अधिनियम किसानों को शोषण के भय के बिना समानता के आधार पर प्रसंस्करणकर्ताओं (प्रोसेसर्स), एग्रीगेटर्स, थोक विक्रेताओं, बड़े खुदरा कारोबारियों, निर्यातकों आदि के साथ जुड़ने में सक्षम बनाएगा। इससे बाजार की अनिश्चितता का जोखिम प्रायोजक पर हस्तांतिरत हो जाएगा और साथ ही किसानों की आधुनिक तकनीक और बेहतर इनपुट्स तक पहुंच भी सुनिश्चित होगी। इससे विपणन की लागत में कमी आएगी और किसानों की आय में सुधार होगा। यह किसानों की उपज की वैश्विक बाजारों में आपूर्ति के लिए जरूरी आपूर्ति चेन तैयार करने को निजी क्षेत्र से निवेश आकर्षित करने में एक उत्प्रेरक के रूप में काम करेगा। किसानों की ऊंचे मूल्य वाली कृषि के लिए तकनीक और परामर्श तक पहुंच सुनिश्चित होगी, साथ ही उन्हें ऐसी फसलों के लिए तैयार बाजार भी मिलेगा। किसान प्रत्यक्ष रूप से विपणन से जुड़ सकेंगे, जिससे बिचौलियों की भूमिका खत्म होगी और उन्हें अपनी फसल का बेहतर मूल्य मिलेगा। किसानों को पर्याप्त सुरक्षा दी गई है और समाधान की स्पष्ट समयसीमा के साथ प्रभावी विवाद समाधान तंत्र भी उपलब्ध कराया गया है।

किसानों की आशंकाएं

आन्दोलनरत किसानों को आशंका है कि इन तीनों कृषि कानूनों के लागू होने से बहुराष्ट्रीय कंपनियों का देश की खेती और जमीन पर अधिकार हो जाएगा। कंपनियां किसानों की जमीन पर कब्जा कर लेंगी और किसान अपनी जमीन पर मजदूर बनकर रह जाएगा। किसान को अपनी जमीन की चिंता है। इसके साथ ही किसानों का मानना है कि खेती में बड़ी कंपनियों का एकाधिकार होने के बाद बाजार भाव पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। कंपनियां मनमानी कीमत पर किसानों से उनकी उपज खरीदेंगीं। ऐसे में खेती जो पहले से ही घाटे में है और घाटे में चली जाएगी। किसानों के बीच खेती की 'जमीन के अनुबंध' को लेकर भी आशंकाएं हैं। इसीलिए किसान संगठन मांग कर रहे हैं कि तीनों कृषि कानूनों को वापस लिया जाए और अब कृषि उपज के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी देने वाला कानून भी लाया जाए। लेकिन, सरकार और किसानों के बीच १२ दौर की वार्ता के बाद गतिरोध पैदा हो गया है। इसके बाद कोई भी वार्ता नहीं हुई है। जबकि किसान अभी भी दिल्ली बार्डर पर बैठे हैं।

राष्ट्रीय पेंशन संघर्ष समिति, उ.प्र.

(सम्बद्धताः राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद्, उ.प्र.)

अन्त्योदय के प्रणेता

ग्राम भारती के अन्त्योदय विशेषांक

के प्रकाशन पर

हार्दिक शुभकामनाएं

–: निवेदक :–

नितिन चतुर्वेदी
अध्यक्ष

शिवदत्त दुबे
वरिष्ठ उपाध्यक्ष

प्रदेश कार्यालयः बी–4, दारुलशफा, लखनऊ–226001

कैंप कार्यालयः आर. बी, 6/2 बांस, देवरिया, उत्तर प्रदेश

मनीष सिंह
ब्लाक प्रमुख, सदर, मुरादाबाद ब्लाक
जिला मुरादाबाद

अन्त्योदय
एवं
पंचायत विशेषांक
के प्रकाशन पर
ब्लाक क्षेत्र के समस्त सदस्यों व ग्राम प्रधानों को
हार्दिक शुभकामनाएं

अन्त्योदय एवं पंचायत विशेषांक
के प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

बसंत सारस्वत
प्रबंधक

मण्डल अध्यक्ष
वित्त विहीन स्कूल प्रबंधक एसोसिएशन, मुरादाबाद
प्रबंधक
पुष्पा सारस्वत स्मृति इण्टर कॉलेज, मंगूपुरा
सनातन धर्म माध्यमिक संस्कृत विद्यालय

रेलवे स्टेशन रोड, गजरौला, जिला अमरोहा (उ.प्र.)
पिनकोड : 244235, मोबाइल : 7017655022

मॉडर्न प्रिंटर्स, लखनऊ फोन : 4017686